द्वितीय अध्याय

द्वितिय अध्याय

'' तत्त्वों के आधार पर ' अकेला पलाश ' उपन्यास की समीक्षा ''

२.१ *कथा वस्तु* -

२.१.१ *महत्त्व* -

कथा वस्तु या कथानक उपन्यास का प्राणतत्व होता है। इसके अभाव में उपन्यास की रचना असंभव है। कथानक क ढाँचेपर ही उपन्यासरूपी भवन खड़ा होता है। उपन्यासकार इसका चयन इतिहास-पुराण, जीवनी, परम्परा तथा यथार्थ जीवन से कर उसमें कल्पना का समावेश करता है।

२.१.२ *कथावस्तु (संक्षिप्त कथानक)* -

यह उपन्यास नायिका तहमीना के पौरूषहीन पति एवं सुंदर, स्वस्थ प्रेमी के त्रिकोण को लेकर लिखा गया है। इसमें प्रमुखता से दाम्पत्य जीवन में आयी ठंडेपन की समस्या को चित्रित किया है। इस उपन्यास की नायिका है, तहमीना। तहमीना सोशलवर्कर है। इसका पति और एक बच्चा भी है। तहमीना समाज के लिए एक सफल गृहिणी है, सफल माँ है लेकिन वह सफल पत्नी नहीं बन पायी है। चाहकर भी वह जमशेद को कभी पूर्ण

रूप से तन-मन से पति नहीं मान पायी है। जमशेद नपुंसक है और उसकी यही, कमजोरी दोनों के बीच लम्बी दीवार बन जाती है। तहमीना और जमशेद की आयु में बहुत ज्यादा अंतर है और इसीकारण जमशेद तहमीना को कभी समझ नहीं सकता है। तहमीना की मानसिक और शारीरिक जरूरतों को जमशेद पूरा नहीं कर सकता । तहमीना अपनी इच्छाओं को मार-कर एक घुटन-भरी जिंदगी जी रही है। तहमीना खुद को जीवन से बहुत अकेला महसूस करती है। तहमीना को अपने जीवन में हमेशा दु:ख का ही सामना करना पड़ा है। उसका बचपन भी एक आतंक भरे वातावरण में व्यतीत हुआ है। माता-पिता के झगडों के कारण घर के घुटनभरे माहौल में वह हमेशा डरी-सहमी रहती है। तहमीना अपने बचपन को याद करते हुए सोचती है - " और बच्चों का तो बचपन हँसते हुए अपने सहपाठियों के बीच बीतता है पर तहमीना का बचपन एक भय में बीता । वह स्कूल में रहती तो घर में हो रहे कांड से घबराहट होती, घर में होती तो अपने को बस रोता हुआ ही पाती ।"[१]

तहमीना का बचपन प्रेम और खुशी के अभाव में ही बीता है। तहमीना पन्द्रह साल की होने पर उसकी माँ विवाह अपने स्वार्थ के लिए उसका एक ऐसे व्यक्ति के साथ कर देती है, जो तहमीना के पिता की उम्र का है और जिसे तहमीना ने कभी शक्ल-सूरत से भी पसंद नहीं किया है। तहमीना मजबूर होकर इस विवाह को स्वीकार करती है। तहमीना पत्नी का कर्त्तव्य, जिम्मेदारी निभाने की अपनी ओर से पूरी कोशिश करती है लेकिन इसके बदले में उसे पत्नी का नारी का वह सुख नहीं मिल पाता जिसकी वह हकदार है। तहमीना जमशेद के बारे में यही महसूस करती है - " जमशेद एक ऐसे रोशनदान हैं जिन्हें उसके नन्हें हाथ कभी नहीं छू

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १०० ।*

सके । वह सारी उम्र एडिया उचका-उचकाकर उन्हें छूने भर की कोशिश करती रही पर इसमें वह कभी सफल नहीं हो पायी।''[१]

तहमीना जमशेद से मदद की सहयोग की अपेक्षा रखती है। लेकिन जमशेद उसकी मदद करने के बजाय उसके विश्वास को कमजोर बनाता रहता है। तहमीना सुन्दर होने के कारण जमशेद उसपर शक करता है। उसपर कई पाबंदीयाँ लगता है। तहमीना अंदर ही अंदर घुट रही है, वह अपने जीवन से परेशान है। लेकिन वह अपने कष्ट, दु:ख के बारे में किसी से नहीं कह सकती। " हमेशा एक झूठी हँसी मुख पर चढ़ाये वह जीती रही, क्योंकि वह जानती है कि बचपन से वह अकेली है। भीड़ है.... पर वह भीड़ उसके लिए नहीं । भीड़ में भी वह अकेली है।''[२]

तहमीना की इस वीरान जिंदगी में तुषार हवा का झोंका बनकर आता है। तुषार तहमीना की कमजोरी जानकर उसे अपनी ओर आकर्षित कर लेता है, वह उसे अपने साथ संबंध बनाये रखने पर मजबूर करता है। तहमीना पहले तो तुषार को इन्कार करती है लेकिन धीरे-धीरे वह भी तुषार को पसंद करने लगने लगती है। तहमीना तुषार को अपना तन-मन समर्पित करती है। तुषार के कारण उसके दु:खी जीवन में बहार आती है। उसका अकेलापन कुछ कम होता है। तुषार को पाकर वह खुद को नसीबवाली मानती है। तुषार के साथ वह अपने दु:ख, अकेलेपन के दर्द को भूल जाती है। और एक दिन जीवनभर साथ देने का वादा करनेवाला तुषार तहमीना को छोड़कर चला जाता है। तहमीना को तुषार के इस तरह छोड़कर चले जाने का बहुत दु:ख होता है। तहमीना तुषार के विरह को सह नहीं पाती, उसके तो होश ही उड़ जाते है। सबसे ज्यादा गम

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १०३।*

२ *वही, पृष्ठ १०३।*

उसे इस बात का है कि तुषार उसे बिना बताए, धोखा देकर चला गया । तहमीना तुषार के मित्र अजय से सवाल करती है - " मेरी दुनिया में उसे आग लगाने को किसने कहा था ? बुझती हुई आग को हवा करने को उससे किसने कहा था ? वह क्यों मेरी दुनिया नोच गया ? मेरे लिए तो जीवन-भर का नासूर बन गया है, अब मैं कैसे और किस मुँह से जिन्दा रहूँ ?''[१]

तहमीना तुषार के जाने की बात को सह नहीं पाती है। वह बीमार पड़ जाती है। बहुत दिनों तक वह अपने को इसी गम डुबाये रखती है। तहमीना के मन में कभी-कभी अपना जीवन समाप्त करने का ख्याल आता है। तहमीना सोचती है कि इस गम को बर्दाश्त करने की उसमें शक्ति नहीं है। " जीवनभर उसे केवल कष्ट मिले। बचपन से लेकर अब तक उसकी वही गूँगी स्थिति है। अजा भी चुपचाप सारी स्थिति को कड़वे घूँट की तरह वह गटक गयी है। अपने को, शरीर को कष्ट दे दिया पर किसी से कहा नहीं। जीवनभर वह बिना बैसाखी के चलती रही, फिर जाने अब क्या हुआ कि वह अपाहिज-सा महसूस कर रही थी, लगता था वह बिना बैसाखियों के एक कदम नहीं चल पायेगी ।''[२] तहमीना इस स्थिति से छुटकारा पाने के लिए अपने अशान्त मन को शांत करने के लिए जगह-जगह भटकती रहती है और अंत में इस गम से बाहर निकलती है - " तुषार समझता है हम टूटकर मिट्टी में मिल जायेंगे, पर नहीं हम यहीं जीकर, हँसकर, उसे दिखायेंगे ।''[३] तहमीना अपने को सँभाल लेती है।

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश , पृष्ठ २२२।*

२ *वही, पृष्ठ २२५ ।*

३ *वही, पृष्ठ २२२ ।*

वह इस सत्य को जान जाती है कि वह जीवन में अकेली है और उसे अकेले ही अपनी परेशानियों और दु:खों का सामना करना है। वह समझ जाती है - " सपने भले लगते है पर बस आँख बन्द रहने तक ही ।

तहमीना अपने मन को समझाकर खुद को काम में व्यस्त कर लेती है। वह एक सफल सोशलवर्कर बन जाती है। दु:खी, बसहारा, रास्ता भटकी हुयी नारियों को सही राह दिखाती है, मदद करती है। तहमीना को लगता है - " वह एक ऐसा वृक्ष करती है जो सिर्फ दूसरों को सहारा देता है। अनगिनत नन्ही-नन्ही बेले उस तने का सहारा पाकर ऊपर चढ़ गई है, पर उसे खुद को कोई सहारा नहीं है। उसे अकेले ही इसी तरह जमीन मजबूती से पकड़े रहकर खड़े रहना है। ऊपर असमान भी है तो बहुत दूर और वह बिना सहारे के अगर लड़खड़ाती है तो उसके साथ ढेर सारी नन्हीं-नन्ही बेलें नीचे गिर पड़ेगी । तहमीना अंत में अपने व्यक्तिव को सशक्त, आत्मनिर्भर बनाती है, अब वह पहलेवाली कमजोर, लाचार तथा बात-बात पर रोनेवाली तहमीना नहीं रहती है उसकी जगह लेती है, एक अच्छे ऊँचे व्यक्तित्ववाली तहमीना खुद को पलाश के फूल की तरह मानती है - " पलाश लाख सुंदर हो, सुंदर फूल हो, पर उसमे सुगंध नही न । उसे जड़े में सजाया नहीं जा सकता, वह किसी भी गुलदस्ते की शोभा नहीं बन पाता । पलाश सिर्फ अपनी डालपर लगता है और उसी पर मुरझाकर धरतीपर गिर जाता है। वह सिर्फ अपने लिए, अपनी डाल तक ही सीमित रहता है। "[१]

तहमीना अपने अकेलेपन का स्वीकार कर लेती है और यहाँ पर कथा समाप्त होती है।

---

१ *मेहसन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ २३२ ।*

२.१.३ *' अकेला पलाश ' उपन्यास के कथानक का विकास -*

कथानक का विकासस, प्रारम्भ (प्रस्तावना), मध्य (विकास), समाप्ति (परिणाम) इन ३ भागों में होता है।

प्रस्तुत उपन्यास के कथानक का प्रारंभ तहमीना और जमशेद के वैवाहिक जीवन से होता है। तहमीना की जमशेद की ओर से निराशा, उसकी घुटन, जीवन के अभाव, तहमीना की मानसिकता, सुख को प्राप्त करने की उसकी छटपटाहट, तहमीना का अपने परिवार के लिए खुद की खुशी को त्यागना, उसका अकेलापन, उसके जीवन के दु:ख अादि घटनाओं से उपन्यास का विकास होता है। तहमीना के दु:खी जीवन में तुषार का प्रवेश और उन दोनों के बढ़ते हुए संबंध उपन्यास को चरमसीमा पर पहुँचा देते है। अगर तुषार तहमीना का साथ जीवनभर दे पाता तो उपन्यास यही समाप्त हो जाता । लेकिन तुषार बीच में ही तहमीना को छोड़कर चला जाता है और तहमीना एक बार फिर जीवन में अकेली रह जाती है। वह अपने आप को सँभाल नहीं पाती है, अपने जीवन को मिटाने के बारे में सोचती है। बचपन से जिस अकेलेपन का सामना वह करती आयी है, एक बार फिरसे उसे उस अकलेपन को गले लगाना है। अंत में वह इस सत्य को जान लेती है कि इस दुनिया में उसका अपना कोई नहीं है, उसे अकेलेही दूसरों का सहारा बनकर जीना है। यहाँ कथा समाप्त होती है।

२.१.४ *कथानक के गुण एवं विशेषताएँ -*

विद्वानों ने उपन्यास की कथावस्तु में निम्न-लिखित गुणों एवं विशेषताओं का होना आवश्यक माना है।

मौलिकता, संभाव्यता, प्रबंध कुशलता, संगठन, रोचकता, मनुष्य जीवन की समस्याओं का चित्रण एवं समाधान, मनुष्य जीवन के

विविध पक्षों का चित्रण ,जीवनानुभूति का चित्रण, जीवन की विभिन्न अवस्थाओं का प्रभावी चित्रण, युगीन परिवेश का अंकन आदि ।

' अकेला पलाश ' उपन्यास के गुण एवं विशेषताएँ निम्न हैं -

२.१.४.१ *मौलिकता* -

पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था में पुरूषों ने अपने स्वार्थ के लिए जो नियम, परम्पराएँ बनायी हैउसमें सिर्फ अकेली नारी को ही पीसना पड़ता है। समाज यह भूल जाता है कि नारी भी आखिर एक इन्सान ही है। उसकी भी अपने जीवन से कुछ आशा-अपेक्षाएँ रहती हैं। लेकिन समाज हर प्रकार से उस पर बंधन डालकर उसे दबोचने की, उसके व्यक्तित्व को मिटाने की कोशिश करता है। इसी सामाजिक परम्पराओं तथा खोंखली रीतियों के कारण तहमीना का अकेलापन, उसकी घुटन समाज के सामने प्रश्नचिह्न खड़ा कर देता है। तहमीना एक दयनीय, असहाय पात्र बनकर हमारे सामने नहीं आयी। बल्कि दाम्पत्य जीवन में आयी ठंडेपन की समस्या, नारी की मानसिकता,उसकी परंपराओं के बंधनों से मुक्त होने की छटपटाहट, माता, पिता, पति, प्रेमी द्वारा उसपर होनेवाला अन्याय, उसके अकेलेपन का दर्द तथा आधुनिक जिंदगी की नकलीयत को मेहरुन्निसा जी ने तहमीना के माध्यम से चित्रित किया है। तनाव, घुटन, छटपटाहट तथा अकेलापन ही इस उपन्यास के कथानक की मौलिकता है।

२.१.४.२ *संभवता* -

तहमीना का सफल पत्नी न बनपाने का दर्द, उसका तुषार के प्रति बढ़ता हुआ आकर्षण आदि बातें प्रस्तुत उपन्यास में संभव लगती है। तहमीना के इस मानसिक बिखराव को उजागर करने में लेखिका सफल हुई है, इसीलिए यह उपन्यास प्रभावशाली लगता है। ' अकेला पलाश ' के कथानक में संभवता गुण अधिकमात्रा में दृष्टिगोचर होता है।

२.१.४.३ *प्रबंध कौशल्य* -

' अकेला पलाश ' उपन्यास मुख्य कथा और प्रासंगिक कथा को लेकर एक सफल उपन्यास बना है। मुख्य कथा और प्रासंगिक कथा औचित्य और प्रभाव के साथ संगठित ही है। मुख्य कथा-तहमीना और प्रासंगिक कथा - तहमीना-जमशेद, तहमीना-तुषार की है। विवेच्य उपन्यास में प्रबंध कौशल्य दृष्टिगोचर होता है।

२.१.४.४ *सुगठन* -

' अकेला पलाश ' उपन्यास एक सुगठित रचना के साथ-साथ एक सफल कृति भी है। ' अकेला पलाश ' की संरचना, स्थितियों का चुनाव, पात्रों का व्यवहार, उन सब के आपसी रिश्ते, भाषा अर्थात् संपूर्ण इकाई के रूप में उसका गठन एक स्वतंत्र रूप से विचारनीय है। कथावस्तु का सुगठन यह ' अकेला पलाश ' की विशेषता है।

२.१.४.५ *रोचकता* -

तहमीना का दु:खभरा बचपन, उसका कम आयु में हुआ विवाह, तहमीना और नाहिद का वार्तालाप, तहमीना और रिंकू की बातें,

विपुल की नास्तिकता, नाहिद का अंतर्जातिय विवाह, तुषार की जिन्दा दील बातें, आदि अनेक बातों से कथा प्रवाह में रोचकता उत्पन्न हुई है। रोचकता के कारण कथानक प्रवाहपूर्ण लगता है।

२.१.४.६ *मानव जीवन की समस्याओं का चित्रण एवं व्याख्या –*

माता-पिता के आपसी झगड़ों का बच्चों पर होनेवाला असर, अनमेल विवाह के कारण दाम्पत्य जीवन में बिखराव, दाम्पत्य जीवन के ठंडेपन के कारण उत्पन्न समस्या, जातियता की समस्या, अकेलेपन की समस्या, नारी के अधिकार की समस्या, नारी की अपनी इच्छाओं की पूरी न कर पाने की छटपटाहट और इन सबके कारण तहमीना जैसी नारियों का जीवन कितना दर्दनाक होता है, इसका परिचय यह कथा पढ़कर मिलता है।

तहमीना के माध्यम से मेहरुन्निसा परवेज जी ने समाज बंधानों में पीसती हुई नारी, उसकी अकेलेपन की घुटन और उसकी समस्याओं का ज्वंलत चित्रण किया है। मानव जीवन की विभिन्न समस्याओं का उद्‌घाटन करने में ' अकेला पलाश ' सफल सिद्‌ध होता है।

२.१.४.७ *नारी का प्रतिनिधिक चित्रण –*

प्रस्तुत उपन्यास की रचना यद्यपि सन् १९८१ ई. की है, फिर भी आज २३ वर्ष बाद भी यह उपन्यास सजीव दिखाई देता है। गत २३ वर्षों में पाश्चात्यों के अनुकरण के कारण पीढ़ी बदल गई, समाज की प्रवृत्तियाँ बदल गयी, युग बदल गया लेकिन नारी की स्थिति आज भी वैसी ही है जैसी २३ वर्ष पहले थी । उस समय तहमीना की स्थिति जैसी थी, वैसी स्थिति अगर आज किसी तहमीना की हो जाती तो उसे उन्हीं

समस्याओं से गुजरना पड़ेगा जिनसे उपन्यास की नायिका तहमीना गुजरी है। आज भी समाज में माता-पिता के झगड़े, अनमेल विवाह तथा दाम्पत्य जीवन में आया हुआ ठंडापन इन सारी समस्याओं के बीच पीसती हुई तहमीना जैसी निर्दोष नारियों की कारूणिक गाथा दिखाई देती है। प्रस्तुत रचना में तहमीना के माध्यम से नारी का प्रतिनिधिक चित्रण हुआ है।

२.१.४.८ *जीवन की विविध अवस्थाओं का चित्रण -*

तहमीना के द्वारा लेखिकाने माता-पिता के बीच के तनाव का बच्चों पर होनेवाला असर, पति के प्रेम, विश्वास तथा अपनेपन को तरसनेवाली नारी की घुटन, मानसिक और शारीरिक जरूरतें पूरी न होने के कारण आया हुआ अकेलापन के कारण नारी की बनती बिगड़ती दुनिया की सभी अवस्थाओं का चित्रण किया है। जीवन के विविध अवस्थाओं का चित्रण ' अकेला पलाश ' के कथानक में पाया जाता है।

२.१.४.९ *जीवन पक्षों के महत्त्व का मूल्यांकन -*

उपन्यासकार मेहरुन्निसा परवेज जी ने तहमीना के जीवन में होनेवाली प्रत्येक घटना का अत्यन्त सूक्ष्म और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है। माता-पिता द्वारा तहमीना की उपेक्षा, माँ का अपने स्वार्थ के लिए तहमीना का विवाह उससे कई ज्यादा उम्रवाले व्यक्ति के साथ कराना, पति द्वारा तहमीना की मानसिक और शारीरिक जरूरतों का पूरा न होना, तुषार का तहमीना को धोखा देकर चला जाना अादि के कारण तहमीना करूणा की पात्र बनकर पाठकों के सामने आती है। इस उपन्यास में नारी मन की प्रत्येक स्थिति, विशेषता और संवेदना का चित्रण सफलता से हुआ है। प्रस्तुत कथानक के द्वारा जीवनपक्षों के महत्त्व का मूल्यांकन हुआ है।

२.१.४.१० *अनुभूतियों की पूर्ण अभिव्यक्ति* -

माता-पिता, पति, प्रेमी के द्वारा उपेक्षा पाने की पीड़ा का पूर्ण विश्लेषण कर मेहरुन्निसा जी ने अकेलापन, दु:ख, अपमान, मजबूरी, निराशा आदि अनुभूतियोंको व्यक्त करने का अवसर तहमीना को दिया है। इस निराशा और अकेलेपन की भावना के कारण तहमीना न ही पति के साथ घुल-मिल सकती है और न ही तुषार के फिर से मिलने के प्रस्ताव को स्वीकार करती है बल्कि इन सबसे अलग वह खुद के व्यक्तित्व को आत्मनिर्भर बनाकर पलाश की तरह अकेले रहना पसंद करती है। उसके अकेले रहने की विवशता तक उसके अनुभूतियों की पूर्ण अभिव्यक्ति हुई है।

२.१.५ *कथावस्तु के प्रकार* -

उपन्यास की कथावस्तु को विभिन्न आधारों पर अनेक प्रकारों में विभाजित किया है। जैसे -

१ प्रधानता के आधारपर -

१. घटनाप्रधान कथावस्तु-घटना की प्रधानता होती है।

२. चरित्रप्रधान कथावस्तु - चरित्रों की प्रधानता होती है।

२ घटना-प्रसंगों के गठन के आधारपर -

१. शिथिल अथवा असंबध्द कथावस्तु।

२. संगठित अथवा संबध्द कथावस्तु।

३ घटना-प्रसंगों की पारस्पारिक सम्बध्दता के आधारपर -

१ सरल कथावस्तु।

२. मिश्र कथावस्तु।

४ विस्तार के आधारपर –

१. मुख्य या अधिकारिक कथावस्तु।

२. गौण या प्रासंगिक कथावस्तु।

' अकेला पलाश ' में निम्नलिखित प्रकारों की कथावस्तु को देखा जा सकता है –

२.१.५.१ *अधिकारिक कथावस्तु* –

' अकेला पलाश ' नारी समस्याप्रधान उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास मे तहमीना नामक एक ऐसे संवेदनशील नारी की कथा अंकित हुई है, जो माता-पिता द्वारा उपेक्षित तथा नपुंसक पति की ओर से निराश है। उपन्यास का संपूर्ण कथानक तहमीना को केंद्र में रखकर ही विकसित हुआ है। संपूर्ण उपन्यास में प्रमुखता से तहमीना का ही चित्रण हुआ है। अतः तहमीना की कथा प्रस्तुत उपन्यास की अधिकारिक कथा है।

तहमीना के चरित्र को अंकित कर के लेखिका पारिवारिक टूटन से उत्पन्न पीड़ा, असफल दाम्पत्य जीवन के कारण निर्माण नारी के अकेलेपन को रेखांकित करना चाहती है। समाज की खोंखली परम्पराओं की शिकार तहमीना को केंद्र बनाकर उसके समूचे मानसिक संसार का मनोवैज्ञानिक और यथार्थ चित्रण किया है।

२.१.५.२ *प्रासंगिक कथावस्तु* –

मूल कथा का केंद्र बिंदु तहमीना है। इस कथा के गठन का उद्देश्य घटनाओं के संकलन का उद्देश्य एकमात्र तहमीना के चरित्र को

पूर्ण विश्लेषित करना है। जो प्रासंगिक कथाये हैं वे मूल कथा को गति देती है और उसके साथ ही समानान्तर रूप से विकसित होते हुए चलती है।

' अकेला पलाश ' में अन्य पात्रों से संबंधित जो कथाएँ हैं वे आरंभ अथवा मध्य भाग में शुरू होती हैं और तहमीना के चरित्र को उभरती हुई अपने उद्देश्य की समाप्ति के साथ ही समाप्त हो जाती है। वे कथाएँ निम्न है -

१ तहमीना और उसके माता-पिता से संबंधित कथा।

२ तहमीना और जमशेद से संबंधित कथा।

३ तहमीना और तुषार संबंधित कथा।

४ तहमीना और नाहिद बाजी से संबंधित कथा।

५ तहमीना और विपुल से संबंधित कथा।

६ महमीना और रिंकू से संबंधित कथा।

७ तहमीना और तरू से संबंधित कथा।

८ तहमीना और मीनाक्षी से संबंधित कथा।

इस प्रकार अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए लेखिका ने कुछेक कथाओं को अवश्य जोड़ा है, परंतु उनका कोई पृथक अस्तित्व नहीं है। उनका अस्तित्व मूल कथा के कारण ही है।

२.१.५.३ *संगठित कथावस्तु* -

' अकेला पलाश ' मूलत: संगठित कथावस्तु की औपन्यासिक रचना है। ' अकेला पलाश ' कथानक एकात्मता को पूरा करता है। उपन्यास का सारा कथानक बड़ी ही कुशलता के साथ नायिका तहमीना के

इर्द-गिर्द घुमते हुए विकसित होता है। विपुल, नाहिद, तरू, विमला, मीनाक्षी के प्रसंग भी उपन्यास को गतिमयता प्रदान करते है। ये सभी प्रसंग (पात्र) तहमीना से संबंधित है।

प्रस्तुत उपन्यास में मुख्य रूप से कोई भी सह-कथा समान्तर रूप से विकसित नहीं होती है। उपन्यास के कथानक के गुम्फित कोई भी घटना ऐसी नहीं मिलती, जिसका अस्तित्व मूल कथानक से अलग होकर सुरक्षित रह सके। कथानक में दिखनेवाली सारी घटनाएँ एम-दूसरे से इस तरह गूँथी हुई हैं कि पहले तो किसी घटना को मूल-कथा से अलग नहीं किया जा सकता है। और किसी प्रकार अलग करके उस घटना को देखे यह तो संभव नहीं ।उदा.नाहिद के विवाह के बाद उनकी पहली रात है। नाहिद की इस रात को देखकर तहमीना के अपने विवाह के बाद की पहली रात याद आती है -

" गोल्डन नाइट! कितना प्यारा, अछूता शब्द है जिसे जबान पर लाते हुए हर लड़की काँप-सी जाती है, सिमटकर सहम जाती है, पर इस शब्द को याद कर उसके अपने मन में कितनी कड़वाहट उतर आती है। यह रात उसके जीवन में भी आयी थी, पर कितनी भिन्न, कितनी अलग! उस रात में जरा भी सुगन्ध नहीं थी, जरा-सी मधुरता नहीं थी । जिंदगी की शुरूआत ही कितने गलत ढ़ंग से हुई थी उसके जीवन में।''[१]

इस प्रकार कोई पात्र या कथा-सूत्र तहमीना से अलग और कटे हुए प्रतीत नहीं होते हैं। ' अकेला पलाश ' की कथावस्तु एक सफल कथावस्तु मानी जा सकती है।

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ ११० ।*

२.२ *पात्र और चरित्र-चित्रण* -

उपन्यास साहिय में ' कथावस्तु ' उपन्यास का प्राणतत्व है, तो ' पात्र तथा चरित्र-चित्रण ' उपन्यास का प्राणभूत तत्त्व है। उपन्यास में चरित्र-चित्रण का बड़ा महत्त्व है। डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त जी पात्रों के दो पहलुओं को स्पष्ट करते हुए कहते हैं - " किसी भी पात्र के व्यक्तित्व के अंतर्गत उसका आकार, रूप, वेशभूषा, आचरण का ढ़ंग, बातचीत आदि आते हैं। और आंतरिक पक्ष का संबंध उसकी मानसिक तथा बौद्धिक विशेषताओं से होता है।''[१]

मेहरुन्निसा परवेज के - ' अकेला पलाश ' उपन्यास के पात्र चरित्र-चित्रण की दृष्टि से पाठक के मानस-पटलपर अमिट छाप डालते हैं। लेखिकाने पात्रों के आंतरिक आवेशों और व्यथाओं का सूक्ष्म और विस्तृत वर्णन करते हुए उद्देश्य तक पहुँचने में सफलता प्राप्त की है।

' अकेला पलाश ' उपन्यास के पात्रों को निम्न वर्गों में विभाजित कर देखना सुविधाजनक होगा --

१ प्रमुख पात्र - तहमीना।

२ सहायक पात्र - जमशेद, नाहिद, विपुल, रिंकू, आदि।

३ गौण पात्र - विमला, मीनाक्षी, तरू, मिसेज खेतान, रजिया, दुलारीबाई, चपराशी, नीलिमा भाभी, तुषार की बहन, तहमीना की माता, तहमीना के पिता, अजय, कचराबाई आदि।

---

१ *डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त - पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत, पृष्ठ ३६६।*

२.२.१ *प्रमुख पात्र* -

२.२.१.१ *तहमीना* -

तहमीना इस उपन्यास की प्रमुख पात्र है। बाह्यपक्ष और आंतरिक पक्ष के द्वारा तहमीना के चरित्र को देखा जा सकता है।

२.२.१.१.१ *बाह्य पक्ष* -

इसके अंतर्गत वेशभूषा, रंग-रूप, दिनचर्या, खान-पान, रहन-सहन आदि बातों का चित्रण किया जाता है। तहमीना के चरित्र के बाह्य पक्ष को निम्नाखित रूप से देखा जा सकता है।

२.२.१.१.१.१ *सौन्दर्यवती* -

तहमीना दिखने में सुंदर, कोमल और प्यारी है। वह एक अच्छे व्यक्तित्व वाली, नाक-नक्शेवाली आकर्षक युवती है। विपुल हर वक्त तहमीना के सुंदरता की तारीफ करता रहता है।-" नहाकर जब वह बाहर निकली तो हल्के गुलाबी रंग के कपड़ों में उसका रूप अधिक निखर आया था। रोई हुई लाल-लाल, बड़ी-बड़ी आँखें सूज आयी थी, जो और भी भली लग रही थीं। जैसे ढेर सारा नशा कर आयी हों । धुले हुए बाल पीठ पर बिखरे थे।"[१] जब वह ठीक तरह से तैयार होकर कहीं बाहर निकलती है तो तुषार तथा नाहिद उसे प्रशंसा-भरी निगाह से देखते है क्योंकि वह ज्यादा सुंदर दिखाई देती है। तहमीना के सौन्दर्य का उपन्यास में ज्यादा चित्रण नहीं है।

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ-८४।*

14496

तहमीना समाज-सेविका है। आदिवासी क्षेत्र में काम करती है। इसी काम के लिए अक्सर दौरे-पर जाना, निरिक्षण करना, रिंकू को कहानी सुनाना, खाना खिलाना, घर के काम करना उसकी दिन चर्या है। खान-पान, वेश-भूषा, रहन-सहन के संबंध में तहमीना का चरित्र मध्यवर्ग की नारी का प्रतिनिधित्व करता है।

आठ-दस वर्ष का वैवाहिक जीवन यापन करने और एक बच्चे को जन्म देने के बाद भी उसका आकर्षण कम. नहीं हुआ है। वह उम्र में बहुत छोटी लगती है। तुषार को तो लगता है कि अभीतक वह कुँवारी है। उसके आकर्षक व्यक्तित्व के कारण तुषार उसकी ओर आकर्षित होता है। तहमीना एक सौन्दर्यवती नारी के रूप में ' अकेला पलाश ' में चित्रित की गई है।

२.२.१.१.२ *आंतरिक पक्ष* -

व्यक्तित्व के आंतरिक पक्ष में व्यक्ति के गुण-दोष,स्वभाव, रूचि, प्रतिभा, मानसिक क्रियाकलाप आदि का अध्ययन किया जाता है। अत: तहमीना की चरित्रगत विशेषताओं को निम्न रूप से देखा जा सकता हैं। अत: तहमीना की चरित्रगत विशेषताओं को निम्नरूप से देखा जा सकता है।

२.२.१.१.२.१ *मध्यवर्गीय शिक्षित नारी* -

तहमीना - अकेला पलाश ' उपन्यास की नायिका है। वह सुसंस्कृत, सुशिक्षित नारी है। वह समाज सेविका है। शहर में उसका मान-सम्मान है। जमशेद उसका पति है और उसके बेटे का नाम रिंकू है। उच्चशिक्षित होने के बावजूद भी वह एक मध्यवर्गीय नाारी होने के बचपन

से ही अपने पर होनेवाले अन्याय को चुपचाप सहती रहती है। परम्पराओं का विरोध करने का साहस उसमें नहीं है। पति उसकी कोई भी जरूरतें पूरी नहीं कर सकता लेकिन फिर भी वह उसे सहती है। तुषार, उसके जीवन में प्रवेश करता है, पहले वह तुषार को मना करती है क्योंकि वहअपने पति के साथ ईमानदार रहना चाहती है। अंत में अपने अकेलेपन को खत्म करने के लिए वह तुषार को समर्पित हो जाती है। तुषार के चले जाने के बाद वह फिर से अकेली रह जाती है, उसके जीवन में दु:ख और निराशा भर जाती है। लेकिन अंत में वह खुद को सँभाल लेती है। कठिन परिस्थितियों का सामना करना सीख लेती है। मध्यवर्गीय होने के कारण वह समाज से डरती भी है।

इस प्रकार मध्यवर्गीय शिक्षित नारी के रूप में हमारे सामने उभर चुकी है।

२.२.१.१.२.२ *स्वाभिमानी नारी* –

तहमीना स्वाभिमानी नारी है। वह किसीसे कुछ माँगना या किसी के सामने झुकना पसंद नहीं करती । बचपन में भी वह कभी अपनी माँ से कुछ नहीं माँगती थी । और बड़ी होकर जब पति द्वारा उसकी शारीरिक जरूरतें पूरी नहीं होती है तब भी वह उससे किसी चीज की माँग नहीं करती है। वह जमशेद से कहती है–" दुनिया के लिए हम पति-पत्नी जरूर रहेंगे, पर आपस में मेरे और तुम्हारे बीच दो हाथ का फासला रहेगा। तुम समझते हो, तुम मुझपर दया करते हो! नहीं, मैं जीवन-भर ऐसे रह लूँगी, पर तुम्हारा कभी-कभार भीख में दिया यह सुख मेरे लिए यातना

बन जाता है।[1] स्वाभिमानी होने के कारण वह अजय को तुषार को अपने बारे में लिखने की इजाजत नहीं देती । वह समझती हैं कि तुषार को अब उसके बारे में जानने का कोई हक नहीं है। अत: स्पष्ट है कि तहमीना स्वाभिमानी नारी हैं।

२.२.१.१.२.३ *सेवाभावी नारी* -

तहमीना समाज सेविका है। समाज सेवा का सारा काम मन लगाकर करती है। अदिवासियों की स्थिति सुधारने का कार्य वह करती है। शहर में उसका मान-सम्मान हैं । तहमीना ध्येयवादी है। घर का दायित्व, रिंकू की परवरिश और समाजसेवा में मग्न तहमीना सेवाभावी नारी है।

२.२.१.१.२.४ *स्वावलम्बी नारी* -

आज नारी को कानून और शिक्षा ने काफी स्वतंत्रता प्रदान की है। वह स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनी है। पुरानी,अनपढ़ , अशिक्षित या रूढ़ीवादी संस्कारों से ग्रसित नारी पूर्णतया परावलंबित होने के कारण कई बार अपमानजनक समझौतों को करते हुए भी दाम्पत्य की गाड़ी खींच ले जाती थी। परंतु आज की आधुनिका आर्थिक दृष्टि से स्वनिर्भर होनेपर उस प्रकार के समझौतों को नहीं कर पाती। तहमीना खुद नौकरी करती है, वह स्वालबम्बी तथा आत्मनिर्भर है। वह अपने पति पर निर्भर नहीं हैं। लेकिन फिर भी वह अपनेपर होनेवाला अन्याय चुपचाप सहती रहती है।

---

1 *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश,पृष्ठ ८२।*

२.२.१.१.२.५ *आधुनिक नारी* –

कानून ने आज नारी को हर क्षेत्र में स्वतंत्रता प्रदान की है। इस स्वतंत्रता के साथ-साथ उसने आधुनिकता का स्वीकार किया है।

तहमीना आधुनिक विचारोंवाली नारी है। और इसीकारण वह जातियता या धार्मिकता मानती नहीं है। आधुनिक होने के कारण वह नाहिद,के कोर्ट मैरेंज में उसकी मदद करती है तथा तरू और विपुल के विवाह पर खुशी महसूस करती है। तहमीना के विचार दकियानुसी नहीं बल्कि आधुनिक युग के है। इससे स्पष्ट होता है कि तहमीना आधुनिक नारी है।

२.२.१.१.२.६ *प्रेमी के प्रति प्रतिशोध की भावना* –

भारतीय नारी जिस पुरूष से प्रेम करती है उसे परमेश्वर की तरह पूज्य मानती है, जब वह उस पुरूष को ही पूर्ण रूपेण पा सकने में असफल हो जाती है तब वह पुरूष उसका सबसे बड़ा शत्रु हो जाता है। उसके प्रति प्रतिशोध की भावना उसके भीतर उमड़ने-घुमड़ने लगती है। नारी का अहं आहत होता है तो वह नागिन एवं शेरनी का रूप धारण करने में नहीं हिचकती । यही मनोवैज्ञानिक सत्य तहमीना के संदर्भ में सही दिखाई देता है। तहमीना तुषार से धोखा पानेपर पहले तो टूट जाती है लेकिन अंत में खुद को सँभालकर वह अपने कार्य मे तन्मयता से जुट जाती है वह अपने आप को बिखरने से बचाती है। तहमीना अजय से कहती है-" जिस जगह हम टूटे हैं, जहाँ हमारे पैर काट लिये गये, वहीं पर हमें खड़े होना है, अपने को सँभालना है। तुषार समझता है हम टूटकर मिट्टी में मिल जायेंगे, पर नही हम यही जीकर हँसकर उसे

दिखायेंगे ।''[१] वह अपने इस कथन को सत्य कर दिखाती है। प्रेमी के प्रति प्रतिशोध की भावना के कारण ही तहमीना अपना जीवन सफल बना पाती है।

२.२.१.१.२.७ *जीवन के प्रत्येक सौदे में पराजय* -

तहमीना अपने जीवन के प्रत्येक सौदे में पराजित हुई दिखाई देती है। परिणाम स्वरूप उसका दाम्पत्य जीवन खण्डित हो जाता है।

इतने वर्षों के विवाहित जीवन की ' विवशता और हताशा' तहमीना के हृदय में अब भी कचोट उत्पन्न करती है। उसकी यह दयनीय स्थिति पाठक के हृदय में संवेदना उत्पन्न करती हैं और वह यह सोचने लगता है कि नियति की क्रूरता का शिकार होनेवाली इस नारी के लिए क्या कोई भी मार्ग शेष नहीं ? - अकेला पलाश ' की तहमीना को पूरे जीवनभर हार का ही सामना करना पड़ा है।

२.२.१.१.२.८ *भारतीय नारी* -

तहमीना कितनी भी आधुनिका क्यों न हो संस्कारों से भारतीय ही है। व्यक्ति हमेशा सामाजिक परिवेश से भाग नहीं सकता । सामाजिक परिवेश में लौट आना उसकी मजबूरी है।

पुरूषप्रधान भारतीय संस्कृति पुरूष का पत्नी से अलग रहना, उसका अन्य किसी से जुड़ना मान्य करती है। लेकिन नारी का ऐसा आचरण सहने की हिम्मत उसमें अभी तक नहीं आ पायी । इसी कारण

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ २२२।*

भारतीय परम्परागत लीक छोड़कर रवह कुछ निर्णय लेते तो उसे ही ज्यादा भुगतना पड़ता है।

नारी का स्वभाव कोमल और भावुक होता है। अत: उसे ही पुरूष की अपेक्षा मानसिक यातनाएँ भुगतनी पड़ती है। तहमीना तुषार का साथ पाकर कुछ क्षण खुश रहती है लेकिन यह संबंध मन-ही-मन उसे कचोटते रहते है।किसी की पत्नी होने के कारण वह इन संबंधों को सहजता से स्वीकार नहीं कर पाती। भारतीय नारी होने के कारण वह ऐसे संबंधों को पाप मानती है।

२.२.१.१.२.९ *दायित्व निभाने में असमर्थ* -

तहमीना जमशेद की पत्नी है, रिंकू की माता तथा तुषार की प्रेमिका है। जमशेद के ढ़ंड़ेपन के कारण पहले ही उका दाम्पत्य जीवन टूट चुका है। वह चाहकर भी सफल पत्नी नहीं बन पाती है। समाज सेवा करने के कारण कभी-कभी उसका रिंकू की ओर दुर्लक्ष होता है। वह उसकी पढ़ाई में मदद नहीं कर पाती है। तुषार की प्रेमिका होने के बावजूद वह अंत तक तुषार के हृदय में स्थान पाने में नाकामयाब होती है। इस तरह तहमीना हर रिश्ते का दायित्व पूरी तरह से निभाने में असफल रहती है।

२.२.१.१.२.१० *प्रेममयी माता* -

तहमीना नि:संदेह एक प्रेममयी माता है। अपने जीवन के तनााव, घुटन और समस्याआं का असर व रिंकूपर नहीं पड़ने देती । वह उसपर अच्छे संस्कार करना चाहती है। उसके प्रति कर्तव्य निभाने से वह कभी भी नहीं चुकती हैं। तहमीना चाहती कि रिंकू एक अच्छा आदमी

बनकर दुनिया के सामने आये । अस तरह तहमीना प्रेममयी माता के रूप में सामने आती है।

२.२.१.१.२.११ *अंतर्द्वन्द्व से पीड़ित नारी* –

तहमीना अपना वैवाहिक जीवन और तुषार का प्रेम इस दोनों के बीच फैसला नहीं कर पाती है। वह जमशेद के उपकारों को भी भूलना नहीं चाहती है। और तुषार के प्रेम को भी ठूकरा नहीं सकती है। सही और गलत के बीच में उसका अंतर्मन हमेशा झूलता रहता है, वह ठीक तरह से फैसला नहीं कर पाती है। ज्यादा भावुक होने कारण उसे अंतर्द्वन्द्व का सामना करना पड़ता है।

२.२.१.१.२.१२ *वैवाहिक सम्बन्धः एक कटघरा* –

तहमीना आधुनिका होते हुए भी पहले भारतीय नारी है। वह जमशेद को खोना नहीं चाहती है। तहमीना लाख कोशिश करती है पर जमशेद में कोई परिवर्तन नहीं हुआ ।

इतने वर्षों के विवाहित जीवन में भी तहमीना वह सुख और उल्लास न पा सकी जो उसे तुषार के सान्निध्य में आकर प्राप्त हुआ । इसलिए विवाह का अर्थ मात्र शारीरिक संबंधों से उत्पन्न संतानोत्पति तक नहीं रह जाता। प्रेम और विश्वास के अभाव में इस सम्बन्ध की नींव लड़खड़ाती–सी प्रतीत होने लगती है। तहमीना को पहली बार तुषार का आत्मीयता से पूर्ण प्रेम प्राप्त होता है।

२.२.१.१.२.१३ *अकेलेपन से पीड़ित* -

तहमीना को जीवनभर अकेलेपन का सामना करना पड़ता है। माता-पिता, पति, प्रेमी तथा बच्चा होने के बावजूद वह खुद को अकेला महसूस करती है। परिस्थिति उसके साथ कुछ ऐसा खेल खेलती है कि जीवन के अंत तक उसे अकेलेपन के दर्द को सहना पड़ता है।

२.२.१.१.२.१४ *शारीरिक और मानसिक घुटन* -

तहमीना की न तो शारीरिक जरूरतें पूरी हो सकती और न ही मानसिक। नपुंसक पति के कारण उसे अपने शरीर की इच्छाओं को मारना पड़ता है। जमशेद के स्वभाव के कारण उसे मानसिक घुटन महसूस होने लगती है। वह अपने जीवन में कभी-भी खुलकर साँस नहीं ले सकती ।

इस प्रकार उपन्यास में तहमीना के माध्यम से लेखिकाने स्वतंत्रता के बाद बनती बिगड़ती हुई आधुनिक नारी का अंकन किया है। तहमीना के असफल जीवन का चित्रण लेखिकाने मार्मिक ढ़ंग से किया है। तहमीना का जीवन उध्वस्त होने में जमशेद का हाथ जरूर है। परंतु भारतीय समाज की आँखें इसके लिए अधिक जिम्मेदार ठहराएगी तहमीना को ही । क्योंकि मनुश्य या समाज कितना ही क्यों न बदले या सुधरे अपने प्राचीन संस्कारों को सहजता सेनहीं छोड़ता। इसी कारण तहमीना के जीवन में जितनी उलझनें निर्माण होती है उतनी जमशेद या तुषार के जीवन में नहीं ।

अत: स्पष्ट है कि मेहरुन्निसा परवेज जी के चरित्र से भारतीय नारी मन की भावुकता, वेदना, अवहेलना को व्यक्त कर साथ ही अतिरिक्त व्याकुल नारी को सजग किया है।

लेखिका ने तहमीना के माध्यम से नारी समस्याओं को ही इस उपन्यास में चित्रित किया है।

२.२.२ *सहायक एवं गौण पात्र* -

२.२.२.१ *जमशेद* -

जमशेद तहमीना का पति है। वह नौकरी करता है। उसके चरित्र की विशेषताएँ निम्न है -

२.२.२.१.१ *अहंवादी* -

जमशेद अहंवादी आदमी है। अहं के कारण वह तहमीना से कभी समझौता नहीं करता । अहं के कारण उसके मन में स्वामित्व की भावना पैदा हुई है। वह तहमीना पर अधिकार जताना चाहता है जब कि वह उसके काबील नहीं है। जमशेद के अहंवाद के कारण तहमीना और उसका वैवाहिक जीवन बिखर जाता है।

२.२.२.१.२ *स्त्री को गौण माननेवाला* -

जमशेद स्त्री को गौण समझनेवाला है। उसे नारी का पुरूष से आगे बढ़ना पसंद नहीं है। वह नारी को अपने से कम, अपने हुकूमत में रहनेवाली और खासकर एक उपभोग की वस्तु मानता है। तहमीना की इच्छाओं का उसकी नजर में कोई अर्थ नहीं है। जमशेद पुरूष सत्ताप्रधान समाज का प्रतिनिधित्व करनेवाला पात्र है।

२.२.२.१.३ *स्वतंत्र विचारों के माननेवाला* -

जमशेद अपने स्वतंत्र विचारों को महत्त्व देनेवाला है। वह अपने विचार अपनी पत्नी पर डालना चाहता है। संबकुछ अपना ही सही है और औरों का गलत है ऐसा वह समझता है। तहमीना जैसी आधुनिक नारी के साथ शादी करता है परंतु उसे अपने विचारोंपर नचाना चाहता है। वह तहमीना को बंधन में रखना चाहता है। जमशेद स्वयं के बारे में स्वतंत्र विचारों को अपनानेवाला व्यक्ति है।

२.२.२.१.४ *पत्नी को बंधन में रखनेवाला* -

जमशेद तहमीना पर अनेक पाबंदीयाँ लगाता है। उसे तहमीना का दौरे से देर से लौटना, विपुल के साथ बातें करना, तहमीना का स्मार्ट दिखना पसंद नहीं है। जमशेद पढ़ा-लिखा होकर भी दकियानुसी विचारोंवाला व्यक्ति है।

२.२.२.१.५ *पत्नी की सफलतापर जलनेवाला* -

जमशेद की पत्नी तहमीना समाजसेविका है। तहमीना की उन्नति को वह सह नहीं पाता और इसीकारण वह उसे किसी भी बात में सहयोग नहीं देता । वह उसे मदद करने के बजाय उसके आत्मविश्वास को कमजोर बनाता रहता है। जमशेद से तहमीना की सफलता देखी नहीं जाती है ।

२.२.२.१.६ *पुरूषत्वहीन* -

जमशेद नपुंसक है और इसीकारण वह तहमीना की शारीरिक इच्छा पूरी नहीं कर सकता । उम्र में वह तहमीना से काफी बड़ा है और

इस फर्क के कारण वह तहमीना को समझ नहीं सकता । उसके कारण उन दोनों के बीच हमेशा तनावपूर्ण वातावरण रहता है।

जमशेद एक ऐसे पति के रूप में सामने आता है जो अपने पत्नी की इच्छाओं का सम्मान न कर उसपर अपने मत लादना चाहता है, उसपर अपना अधिकार जताना चाहता है।

२.२.२.२. *तुषार* -

२.२.२.२.१ *मशहूर तथा काबील एस.पी.* -

तुषार एस.पी. है। उसकी शहर में इज्जत है, सम्मान है। अपना कार्य वह मन लगाकर तथा पूरी मेहनत से करता है। तहमीना के ऑफ्स के चोरी हुए टाइपरायटर का और चोर का पता वह इतनी जल्दी लगाता है कि तहमीना उसके इस कौशल्य पर आकर्षित होती है। तुषार शहर में मशहूर तथा काबील एस.पी. है।

२.२.२.२.२ *परिस्थिति से समझौता करनेवाला* -

तुषार किसी भी बिकट परिस्थिति से सहज समझौता करनेवाला होने के कारण विषम से विषम परिस्थिति में भी समझौता करता है। जब तहमीना और उसके सम्बन्ध की चर्चा शहर में होने लगती है तो वह परिस्थिति से समझौता करके तहमीना को छोड़कर दिल्ली चला जाता है। तुषार परिस्थिति के आगे झुकनेवाला व्यक्ति है। वह कहता है - ' मैं नदी के बहाव के खिलाफ तैरने की कोशिश में इतना थक गया हूँ कि अब जैसे हिम्मत ही जवाब देने लगी है, लेकिन मैं अपना अहं ओढ़े हुए अभी भी बहाव के खिलाफ पड़ा हूँ। हाथ-पाँव मारना कुछ कम कर दिया है.... बस

इन्तजार है, बाकी मनोबल टूटने की, ताकि मैं भी एक आम आदमी बनकर मिट सकूँ।''[१]

२.२.२.२.३ *जिन्दादील स्वभाव वाला व्यक्ति* –

तुषार एक जिदादील इन्सान है। वह जहाँ भी जाता है अपने हँसी मजाक के कारण वहाँ वातावरण हल्का-फुल्का बनाता है। उसके इसी स्वभाव के कारण उसके कई दोस्त है। जिन्दादील स्वभाव के कारण तुषार के चाहनेवाले बहुत है।

२.२.२.२.४ *आकर्षक व्यक्तित्ववाला* –

तुषार दिखने में सुंदर है और हमेशा आकर्षक लगता है और इसीकारण विवाहित तहमीना तुषार की ओर आकर्षित होती है। तुषार एक आकर्षक व्यक्तित्ववाला व्यक्ति है।

२.२.२.२.५ *धार्मिक* –

तुषार धार्मिक स्वभाववाला, व्यक्ति है। वह पूजा-पाठ, व्रत-उपवास, जप-जाप अादि में विश्वास रखता है। तुषार का मानना है कि धर्म उसे बांधे रखता है,भटकने नहीं देता, धर्म की आड़ में मन का बहुत-सा विकार दूर हो जाता है। इससे साबित होता है कि तुषार धार्मिक विचारोंवाला हैं।

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १६५।*

२.२.२.२.६ *आधुनिक विचारधारा का समर्थक* -

तुषार आधुनिक विचारों को अपनानेवाला व्यक्ति है। तुषार पाप और पुण्य की खोंखली कल्पनाओंपर विश्वास नहीं रखता । उसका मानना है कि जिस बात से हमें सुख मिलता है वही करना चाहिए। वह तहमीना से कहता है कि पाप-पुण्य यह दकियानुसी और पुराने विचार है।

२.२.२.२.७ *स्वार्थी* -

तुषार स्वार्थी व्यक्ति है वह सिर्फ अपने बारे में सोचता है। वह तहमीना से कहता है-" मैं दुनियावी आदमी बनना चाहता हूँ, सिर्फ उतना ही मुँह खोलना चाहता हूँ, उतना ही हाथ-पाँव हिलाना चाहता हूँ जितने से मुझे सुख-सुविधा,मान-सम्मान मिले। मैं इस लाभ के कमाने में दूसरों के दर्द की कल्पना भी नहीं करना चाहता ।"[१] तुषार के विचारों से स्पष्ट होता है कि तुषार निहायत ही स्वार्थी व्यक्ति है।

२.२.२.२.८ *ड़रपोक* -

तुषार अपनी बदनामी से बहुत घबराता है। इसी कारण जब लोगों में तहमीना और उसके सम्बन्ध क बारे में चर्चा होने लगती है, तो व तहमीना को बिना बताए बदनामी के ड़र से शहर छोड़कर चला जाता है। तुषार एक डरपोक व्यक्ति है।

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १६६।*

२.२.२.२.९ *वास्तववादी* -

तुषार वास्तविकता को पहचाननेवाला व्यक्ति है। उसका कहना है - " जिंदगी उतनी सीधी और सपाट नहीं है जितनी वह दिखती है। वह रूपये की तरह है जो गोल... गोल और सिर्फ गोल है। यह एक मृगतृष्णा है, न तो हिरन को पानी मिलता है और न ही मृगतृष्णा ही टूटती है।''[१] तुषार वास्तविकता से दूर नहीं भागता उसका स्वीकार करता है।

२.२.२.२.१० *दायित्व को निभानेवाला* -

तुषार अपने दायित्व का पालन जिम्मेदारी के साथ करता है। उस पर अपने परिवार की जिम्मेदारी है, बहनों की शादी करनी है और इसी कारण उसने अभीतक विवाह नहीं किया है। तुषार एक जिम्मेदार तथा दायित्व निभानेवाला व्यक्ति है।

२.२.२.२.११ *दूसरे के मन को जाननेवाला* -

तुषार के पास दूसरे व्यक्ति के मन को जानने की कला है, जिसके कारण वह तहमीना की घुटन को पहचानकर उसके जीवन में खुशी के कुछ क्षण बिखेर देता है। तहमीना की कमजोरी जानकर वह उसे अपनाने में कामयाब होता है।

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १६७।*

२.२.२.२.१२ *प्रेरणादायी* -

तुषार प्रेरणादायी है। मानवमन को समझने की पैनी दृष्टि उसके पास है। तुषार की इसी प्रेरणा के कारण तहमीना अपने सारे तनाव, द्वन्द्व, बंधन ढीले महसूस करती है। तुषार तहमीना को अपने जीवन तथा हक के बारे में सोचने की प्रेरणा देता है।

२.२.२.२.१३ *यथार्थवादी* -

तुषार जीवन के सत्य को पहचानकर चलता है। वह झूठी कल्पनाओं नहीं अपनाता है। वह कहता है-" भावुकता कमजोरी है,मनुष्य को नीचे गिराने का पतन है, और पतन हमेशा मनुष्य को नीचे ही लाता है। वह हमेशा सामने के दृश्य को धुँधला और हिलता हुआ देखता है।"[१] तुषार यथार्थवादी व्यक्ति है।

इस प्रकार मेहरुन्निसा परवेज जी ने ' अकेला पलाश ' में तुषार के चरित्र के माध्यम से एक यथार्थवादी, दूसरों के प्रेरणा देनेवाला, अपने दायित्व को निभानेवाला और एक जिन्दादील व्यक्ति के रूप में चित्रित किया है।

२.२.२.३ *नाहिद* -

नाहिद तहमीना की दूर के रिश्ते की बहन है। वह एक डॉक्टर है। उसके चरित्र की विशेषताएँ निम्नलिखित है -

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १६४।*

३.२.२.३.१ सुन्दर -

नाहिद दिखने में बहुत सुन्दर है। वह तहमीना से बड़ी होकर भी उम्र में छोटी ही लगती है। उसकी सुंदरता और आकर्षक व्यक्तित्व के कारण ही डॉ. महेश अग्रवाल उसकी ओर आकर्षित होते है तथा डॉ. खान भी उससे विवाह करने की इच्छा रखते है।

२.२.२.३.२ *गम्भीर* -

नाहिद हमेशा गंभीर और उदास रहती है। कम उम्र में ही जीवन ने उन्हें गंभीरता से जीना सिखाया है। तहमीना उसके बारे में कहती है - " अपने में ही सिमट कितना एकाकी, चेहरा है यह ... कितना सुंदर फूल है यह, पर जैसे हँसना भूल गया हो ।"[१] गम्भीर व्यक्तित्व वाली ~~तहमीना~~ हमेशा उदास और निराश रहती है।

२.२.२.३.३ *परिवार के दायित्व को निभानेवाली* -

नाहिद अपने परिवार की जिम्मेदारी एक बेटे की तरह निभाती है और अपने कर्तव्य को निभाने के लिए उसने अभी तक विवाह नहीं किया है। दायित्व को निभाते हुए वह अकेली और गंभीर बन गयी है।

२.२.२.३.४ *आत्मकेंद्रित* -

नाहिद आत्मकेंद्रितहै। वह लोगों में ज्यादा घुल-मिल नहीं पाती। वह हमेशा अकेली और उदास रहती है। कोई उसके बारे में चर्चा

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ २७।*

करता है तो यह बात वह पसंद नहीं करती है।न तो वह किसी के जीवन में ताकती है और न ही दूसरों को अपने जीवन में दखल देने की इजाजत देती है। आत्मकेंद्रित होने के कारण लोग उसे घमंडी समझते हैं।

२.२.२.३.५ *विद्रोही प्रेमिका* -

नाहिद महेश से प्रेम करती है। दोनों की जाति अलग होने के कारण जब उसके परिवारवाले विवाह से इन्कार करते हैं तो वह घर का त्याग कर डॉ. महेश के साथ विवाह करती है। नाहिद विद्रोही प्रेमिका के रूप में पाठ़कों के सामने आती है।

२.२.२.३.६ *धार्मिक* -

नाहिद उच्चशिक्षित है, डॉक्टर है लेकिन फिर भी उसका स्वभाव बहुत ज्यादा धार्मिक है। वह दिन में पाँच बार नमाज पढ़ती है। पिता के विचारों के कारण यह इतनी ज्यादा धार्मिक बन गई है। ' अकेला पलाश ' की नाहिद एक धार्मिक नारी है।

२.२.२.३.७ *स्नेहमयी माता* -

नाहिद विवाह के बाद सास की वजह से परेशान, दु:खी है। लेकिन अपने बेटे को देखकर वह अपने सारे दु:ख, कष्ट भूल जाती है। वह अपने बच्चे से बहुत प्रेम करती है। नाहिद स्नेहमयी माता के रूप में चित्रित की गयी है।

२.२.२.३.८ *अंतर्जातीय विवाह के कारण दुःखी* -

नाहिद मुसलमान है और डॉ. महेश हिंदू उनका विवाह महेश की माता जी को पसंद नहीं है और इसी के कारण नाहिद को दिन-रात ताने सुनने पड़ते है, अपमान सहना पड़ता है। अंतर्जातीय विवाह के कारण नाहिद का जीवन दुःखी है।

नाहिद के चरित्र में गम्भीरता, परिपक्वता, अपने कर्तव्यों को निभानेवाली, विद्रोही, आत्मकेंद्रित आदि गुण नजर आते है।

२.२.२.४ *विपुल* -

विपुल तहमीना का मुँहबोला भाई है। वह एम.एस्सी. तक पढ़ा हुआ है।

२.२.२.४.१ *होशियार* -

विपुल होशियार है। वह एम.एस.सी. में फर्स्ट आया हुआ है। उसने एन.सी.सी. में भी अव्वल नंबर लिए है तथा खेल-कूद में भी बढ़िया सर्टिफिकेट पाये है।

२.२.२.४.२ *जीवन को सहजता से लेनेवाला* -

विपुल जीवन की कठिनाइयों को सहतजा से लेता है। वह अपनी किसी तकलीफ को दूसरों को नहीं बताता । अपनी परेशानियों को अपने तक ही सीमित रखकर वह दूसरों को हसाता रहता है। वह कभी उदास या निराश नहीं लगता । जीवन की समस्याओं को सहजता से नेले के कारण वह जीवन में सफलता प्राप्त करता है।

२.२.२.४.३ *मेहनती* –

विपुल मेहनती स्वभाव का है। घर की गरीबी के कारण वह लकड़ी चीरता है। उसने एक भैंस भी पाल रखी है, जिसकी वह सेवा करता है। वह एम.एस.सी. तक पढ़ा है। लेकिन कोई भी काम करने में वह शरमाता नहीं है। मेहनत करने में वह संकोच नहीं करता ।

२.२.२.४.४ *हमेशा खुश रहनेवाला* –

विपुल बेकार है, वह नौकरी की तलाश में है। उसके जीवन में गरीबी के कारण अभाव ही अभाव है लेकिन अपने दु:खों को वह कभी व्यक्त नहीं करता है वह हमेशा खुश रहता है और दूसरों को खुश करता है।

२.२.२.४.५ *प्रेरणादायी* –

विपुल दूसरों को प्रेरणा देता है। वह तहमीना को अपनी ओर ध्यान देने के लिए कहता है। जीवन को खुशी से जीने के लिए कहता है। वह तहमीना को आधुनिक ढ़ंगसे सोचने की प्रेरणा देता है।

२.२.२.४.६ *भावुक* –

विपुल भावुक है। वह दूसरें के दर्द से व्यथित होता है। तहमीना के जीवन की परेशानियाँ, घुटन देखकर वह खुद को दु:खी महसूस करता है। वह अपनी ओर से उसे खुश रखने का प्रयास करता है। भावुकता विपुल की विशेषता है।

२.२.२.४.७ *दूसरों की मदद करनेवाला* -

विपुल हमेशा दूसरों की मदद करता रहता है। उसके खुद के जीवन में इतने अभाव होने के बावजूद भी वह दूसरों के बारें में सोचता है। वह तहमीना को उसकी परेशानी में मदद करता है।

२.२.२.४.८ *मानवतावादी* -

विपुल एक मानवतावादी व्यक्ति है। उसके विचार बहुत ऊँचे दर्जे के है। वह तरू से विवाह करता है जबकि वह शादीशुदा है तथा उसके दो बच्चे है। विपुल तरू को उसके बच्चों के साथ अपनाता है और उसे भटकने से बचाता है। मानवता विपुल का विशेष गुण है।

२.२.२.४.९ *आधुनिक विचारोंवाला* -

विपुल के विचार आधुनिक है। वह तहमीना की घुटन को देखकर सोचता है कि उसे अपने सुख को पाना चाहिए, खुली हवा में साँस लेनी चाहिए। विपुल आधुनिक विचारों का पात्र है।

२.२.२.४.१० *जीवन की सच्चाई जाननेवाला* -

विपुल जीवन के सत्य को जानता है। वह जीवन को सरलता से जीना चाहता है। वह तहमीना से कहता है-" जिंदगी में छोट-मोटे जलजले तो आते ही रहते हैं और हर जलजला अपनी पहचान, दरार छोड़ जाता है, इनसे कोई नहीं बच सकता । पर पारिवारिक जीवन में फिर से संतुलन लाना निहायत जरूरी होती है, वरना बेचैनी और भटकन अपनी ज्यादा देर बर्दाश्त

नहीं कर सकता।''[१]

विपुल एक मेहनती, काबील, दूसरों की मदद करनेवाला तथा मानवतावादी लड़का है।

२.२.२.५ *गौण पात्र* -

गौण पात्रों में निम्नलिखित पात्रों का उल्लेख आता है -

२.२.२.५.१ *मीनाक्षी* -

मीनाक्षी महमीना के ऑफिस में काम करती है। वह एक अच्छी सहायिका है। तहमीना के जीवन का दर्द तथा परेशानियों को पहचानकर वह उसे हर वक्त मदद करती है। वह अपने ऑफिस का काम भी अच्छी तरह सँभाल लेती है। तुषार के जाने के बाद तहमीना उदास सी रहने लगती है उसकी इस स्थिति से उसे बाहर निकलने के लिए मीनाक्षी ही तहमीना की मदद करती है। उसके जीवन में दु:ख होने के बावजूद वह दूसरों के दु:ख को कम करने का प्रयास करती है।

२.२.२.५.२ *विमला* -

विमला एक ऐसी नारी है जो गलत लोगों के चक्कर में फँसने के कारण उसे अपने परिवारवालों ने त्याग दिया है। और उसके बाद उसने मजबूरन संन्यास लिया है। दुनिया ने उसकी मजबूरी का फायदा उठाकर उसे भोग की वस्तू माना है। विमला संन्यासिनी है लेकिन उसने

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ २२०।*

मन से मोह-माया का त्याग नहीं किया है। संन्यास तो उसने अपने स्वार्थ और मजबूरी कारण लिया है।

२.२.२.५.३ *रजिया* -

रजिया बीस-इक्कीस साल की लड़की है, जो एक विवाहित व्यक्ति से प्रेम करती है। तहमीना के समझाने पर वह अपनी गलती समझ जाती है।

२.२.२.५.४ *दुलारीबाई* -

दुलारीबाई एक विधवा है। उसकी असहायता का फायदा उठाकर ग्रामसेवक उसपर जबर्दस्ती करता है। अपने बच्चों का और अपना पेट पालने के लिए उसे यह सब सहना पड़ता है।

२.२.२.५.५ *नीलिमा भाभी* -

नीलिमा भाभी तहमीना के पहलेवाली चेयरमैन है। उसे अपने आप को बड़ा समझने की तथा दूसरों के मामले में झाँकने की आदत है।

२.२.२.५.६ *मिसेज खैतान* -

मिसेज खेतान एक आदिवासी केंद्र में शिक्षिका है।

२.२.२.५.७ *तरू* -

तरू एक विवाहित स्त्री है, जो अपने पति और माता-पिता का

घर छोड़कर अपने दो बच्चों के साथ रहती है। उसे विपुल का सहारा मिलता है।

२.२.२.५.८ *अजय* -

अजय तुषार का दोस्त है। तहमीना के बारे में जानने के बाद वह उसे तसल्ली देता है उसे मदद करने का आश्वासन देता है। वह मानवतावादी है।

२.२.२.५.९ *चपरासी बाबू* -

बाबू तहमीना के ऑफिस का चपरासी है। वह एक नंबर का गुंड़ा और बदमाश है। वह ऑफिस का टाइपरायटर चुराता है।

२.२.२.५.१० *शिखा* -

शिखा तुषार की बहन है। जो अपनी भाई की शिकायत करती है कि तुषार उसकी शादी किसी सामान्य घर में नहीं कर रहा है।

२.२.२.५.११ *तहमीना के माता-पिता* -

तहमीना के माता-पिता ने अपने झगड़े के कारण अपनी बेटी का जीवन बरबाद किया है। उसकी माँ ने अपने परिवार को बचाने के लिए तहमीना की कुर्बानी दी है।

२.२.२.५.१२ *रिंकू* -

रिंकू तहमीना का बेटा है, जो स्वभाव से भोला-भाला और प्यारा है।

२.२.२.५.१३ *निक्की और आशु* -

निक्की और आशु तरू के बच्चे है, जो झगड़ा करते है तथा हर चीज में लालच दिखाते है।

इसके अलावा ' अकेला पलाश ' में नाहिद की सास,नाहिद के अब्बा, नाहिद की माता,भाई, भाभी, विनोद, तुषार के माता-पिता, भाई, बहने, मेहता, पागल आदमी, रेस्टहाऊस का चौकीदार, कचराबाई, महेश के दोस्त अादि नामनिर्देशित पात्रों का उल्लेख हुआ है।

२.२.३ *' अकेला पलाश ' में प्रयुक्त चरित्र-चित्रण की विशेषताएँ* -

डॉ. भगीरथ मिश्र जी ने चरित्र-चित्रण के महत्त्व को स्वीकारते हुए कहा है - " चरित्र-चित्रण की तीन विशेषताएँ मानी जाती है "[१] -

१ चरित्र का व्यक्तित्व ।

२ चरित्र के बौध्दिक गुण । और

३ चरित्र के चरित्र गुण ।

---

१ *डॉ. भगीरथ मिश्र - काव्यशास्त्र, पृष्ठ ७९।*

२.२.३.१ *चरित्र का व्यक्तितव* -

व्यक्तित्व के भीतर पात्र का आकार, रूप, रंग, वेशभूषा अदि सम्मिलित रहता है, जिसके द्वारा हम उसे पहचानते हैं। यदि उपन्यास के भीतर इन बातों का विवरण नहीं हो तो हम अपनी कल्पना और अनुभव के आधारपर उसके व्यक्तित्व का रूप बनाते हैं। यह व्यक्तित्व जितना प्रभावशाली एवं अन्य सजातीय पात्रों से भिन्न जान पड़े उतनाही अच्छा होता है।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखिकां ने पात्रों का चरित्र-चित्रण आंतरंग और बहिरंग दोनों प्रकार से किया है।

२.२.३.१.१ *बाह्य व्यक्तित्व* -

तहमीना के चित्रण द्वारा इस पध्दतिका सफलता से प्रयोग हुआ है। जैसे -

" तहमीना ने हल्के बैंगनी रंग की प्लेन साड़ी पहन रखी थी तथा उसके साथ मैच करता उसने सैट पहन रखा था, जो उसके लंबे और छरहरे शरीरपर बहुत फब रहा था।"[१]

२.२.३.१.२ *आंतरिक व्यक्तित्व* -

प्रस्तुत उपन्यास में अंतरंग चित्रण के भी पर्याप्त दर्शन होते है। तहमीना तथा नाहिद के अंतर्द्वन्द्व द्वारा उनकी मानसिक मनोदशा एवं मनस्ताप का चित्रण हुआ है।

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ ७०।*

तहमीना को जीवन में कोई भी ऐसी व्यक्ति या चीज नहीं मिल पाती जिसे पाकर वह खुश हो सके । उसके अपनों ने ही उसका उपयोग स्वार्थ के लिए किया है। वह सोचती है-" उसे पत्नी का,नारी का वह सुख क्यूँ नहीं मिला जिसकी वह हकदार थी ? किसने उसे श्राप दिया, और कब तक वह नाटक करती जिये ? दुनिया को वह दिखाती रहे कि वह सुखी है,सारे लोग खुद उसकी दोस्तें यह सोचती है कि यह सुखी है, उसे पूर्ण रूप से सुख प्राप्त है; पर वह इन लोगों को कैसे कहे कि यह सब झूठ है, झूठ के सिवाय कुछ नहीं ?''[१]

२.२.३.२ *चरित्र के बौद्धिक गुण* -

डॉ. भगीरथ मिश्र के मतानुसार - " बौध्दिक गुणों के भीतर उसका अध्ययन, चतुरता, संकट में बुध्दि वैभव आदि की विशेषताएँ आती हैं ।''[२]

मेहरुन्निसा परवेज ने ' अकेला पलाश ' में तहमीना को जीवन से निराश, जमशेद को आत्मकेंद्रित,तुषार को स्वार्थी, नाहिद को गंभीर आदि पात्रों के बौध्दिक गुण दशयि हैं। तुषार तहमीना को ज्यादा भावुक न बनने को कहता है और उसे समझाता है --

" मनुष्य में भावना होना तो ठीक, पर भावुकता बुरी चीज है। यह ऐसा ही है जैसे आँखें डबडबा आयी हों तो सामने का सारा दृश्य धुँधला जाता है, हिलता नजर आता है, स्थिर नजर नहीं आता । बस उसी तरह भावुक व्यक्ति अपने सामने के दृश्य को साफ नहीं देख पाता और

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ट ८२।*

२ *वही, पृष्ट ७९।*

इसी में वह धोखा खा जाता है। भावुकता कमजोरी है, मनुष्य को नीचे गिराने का पतन है और पतन हमेशा मनुष्य को नीचे ही लाता है। वह हमेशा सामने के दृश्य को धुँधला और हिलता हुआ देखता है।"[१]

नाहिद तहमीना को तसल्ली देते हुए कहती है - " तुम्हें यह सहना होगा, वरना तुम भी सैकड़ो, हजारों, करोड़ों औरतों की तरह सिर्फ एक बीवी बनकर दम तोड़ दोगी । और तुम्हें यह नहीं करना है, तुम्हें इस दायरे से बाहर आना है और इस टेन्शन को बर्दाश्त करना है। तुम एक हो पर तुम्हें कई की टयूटी निभाना होगा।''[२]

२.२.३.३ *चारित्रिक गुण -*

पात्रों के चारित्रिक गुणों का प्रभाव सबसे अधिक पाठकों पर पड़ता है। चरित्र के गुण-अवगुणों पर ही पात्र पहचाने जाते है। चारित्रिक विशेषताआं में उनके आचरण और दूसरों के प्रति व्यववहार को भी परखा जाता है।

प्रस्तुत उपन्यास में पात्रों के चारित्रिक गुणों का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से बड़ीकुशलता से चित्रण हुआ है।

तहमीना जमशेद के ठंड़ेपन को देखकर सोचती है - ' कैसा पुरूष है, यह इसे क्या कभी नारी की, पत्नी की आवश्यकता नहीं होती ?''[३]

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १६४।*

२ *वही, पृष्ठ ३३।*

३ *वही, पृष्ठ ८१।*

तहमीना तुषार के स्वार्थ को अनुभव करने के बाद अजय से कहती है - " कितना कंगाल, भिखमंगा, बेचारा है वह आदमी जिसे दान करना नहीं आता, जो प्यार करना नहीं जानता..... और हम भी कितने पागल निकले, कंगाल से दान की चाह करते रहे ' जो खुद भिखमंगा हो व दूसरों को क्या दान करता ? '' [१]

इस प्रकार पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं के कारण तहमीना के प्रति करूणा एवं सहानुभूती, तुषार के प्रति घुणा, नाहिद के प्रति आत्मीयता, विपुल के प्रति आदर पाठकों के दिल में निर्माण होता है।

आलोच्च उपन्यास में तहमीना, नाहिद, तुषार, जमशेद का विशेष महत्त्व होने के कारण हमने उनके चरित्र-चित्रण की विशेषताओं को देखा है अत: अन्य पात्रों की ओर ध्यान नहीं दिया ।

२.२.४ *' अकेला पलाश ' में प्रयुक्त चरित्र-चित्रण की विधियाँ* -

पात्रों के चरित्र-विकास की पध्दतियों के बारे में सामान्यत: अधिकांश आलोचकों ने दो ही पध्दतियाँ माना है। वे है --

१. विश्लेषणात्मक । और

२. नाटकीय या अभिनयात्मक विधि ।

लेकिन आधुनिक उपन्यासों को देखते हुए कुछ नयी विधियों के प्रयोग भी प्रचलित हैं। वे हैं - विश्लेषणात्मक, अभिनयात्मक एवं नाटकीय, मनोवैज्ञानिक, पूर्ववृत्तात्मक, संकेतात्मक, भावात्मक, स्वगतात्मक विधि आदि ।

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ २२२।*

लेखिका ने उपन्यास केपात्रों के चरित्र-विकास के लिए बहुविध पध्दतियों का प्रयोग किया है। इन विधियों का सोदाहरण विवेचन निम्नलिखित इस प्रकार से है -

२.२.४.१ *विश्लेषणात्मक विधि* -

इसमें उन्यासकार अपने पात्रों के चरित्र-चित्रण में स्वयं अपनी ओर से कुछ लिखता है। जैसे - " ऑफिस के टेबल के सामने बैठते ही मन की कमजोरी, उदासी जैसे बटन दबाते ही गायब हो गयी थी कहीं । उसकी जगह धैर्य-दृढ़ता आ गयी थी । जिम्मेदारी के एहसास ने उसे बाँध लिया, कस के ।''[१]

यहाँ तहमीना के चित्रण द्वारा अनुशासन प्रियता, तटस्थता, जिम्मेदारी का एहसास तथा भविष्य के प्रति सजगता दिखाई देती है।

२.२.४.२ *अभिनयात्मक विधि* -

इसमें उपन्यासकार किसी पात्र के विषय में कुछ नहीं कहता, बल्कि पात्र स्वयं कथोपकथन का आश्रय लेते है।डॉ. गुलाबराय के मतानुसार - ' इस प्रकार के चित्रण में दो प्रकार के चित्रण मिलते हैं। पहले वे जिनमें कि पात्र स्वयं अपने चरित्र का परिचय दे देता है और दूसरे वे जिनमें दूसरे पात्र किसी अन्य के विषय में अपना मत प्रकट कर उसका चरित्र-चित्रण करते हैं।''[२]

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश,पृष्ठ ६।*

२ *डॉ. गुलाबराय - काव्य के रूप, पृष्ठ १६५।*

' अकेला पलाश ' में उपर्युक्त दोनों प्रकार के चित्रण मिलते हैं।

२.२.४.२.१ *प्रत्यक्ष चरित्र-चित्रण विधि* -

" वह क्यूँ माँ से माँगे ? क्या माँ को खुद उसकी जरूरत का ख्याल नहीं होना चाहिए ?और यही बात आज भी उसमें है। आज भी हर चीज के लिए वह चुप रहती है, कोई माँग नहीं ....कोई लालसा नहीं।''[१]

२.२.४.२.२ *अप्रत्यक्ष या अपरोक्ष चरित्र-चित्रण विधि* -

" अपनी चीज को तो हर कोई अपना कह लेता है, पर दूसरों की चीज को अपना कहने के लिए बड़ा कलेजा चाहिए, जो केवल विपुल के पास है।''[२]

२.२.४.३ *मनोवैज्ञानिक विधि* -

इसमें उपन्यासकार पात्रों की मानसिकता तथा अंतर्द्वन्द्वों को उद्‌घाटित करता है।

प्रस्तुत उपन्यास में मेहरुन्निसा परवेज जी ने तहमीना की मन स्थिति का अत्यंत सजीव विश्लेषण किया है --

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ ८१।*

२ *वही, पृष्ठ २२०।*

" इतना कमजोर उसने अपने को कभी नहीं पाया, लगता था लड़ने की सारी ताकत चुक गयी है, कहीं कुछ नहीं बचा । अजनबी गाँव में, अजनबी रेस्ट हाऊस में, अजनबी कमरे में वह अकेली मुर्दा सी पड़ी थी, कहीं कोई आहट नहीं, कोई आवाज नहीं, बस यादें थी, तकलीफ देह यादें, जो उसका निरंतर पीछा कर रही थीं। जिनमें केवल दर्द था,कष्ट था, चुभन थी, मगर आराम नहीं ।"[१]

२.२.४.४ *पूर्व वृत्तात्मक विधि* -

इसमें किसी मनोवैज्ञानिक गुत्थी की विद्यमान तथा पूर्व परिस्थितियों का आकलन कर के चरित्र को स्पष्ट किया जाता है। एक तो पूर्व जीवन के परिचय से दूसरे स्मृति के माध्यम से ।

२.२.४.४.१ *पूर्व-जीवन के माध्यम से* -

तरू के बच्चे को देखकर तहमीना को अपने बचपन की याद आती है।--

" वह अक्सर डबड़बाई आँखे को लिए, आँखें की कोर में आँसुओं को धामे, सहमी-सी खड़ी रहती थी और पूरा प्रयत्न करती थी कि गालोंपर आँसू न बह जायें । दूसरों के सामने अपने आँसू बहनें से रोके वह खामोश, भयभीत-सी खड़ी रहती थी।''[२]

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ २२५।*

२ *वही, पृष्ठ २१३।*

२.२.४.४.२ *स्मृति के माध्यम से* -

नाहिद के विवाह की पहली रात को देखकर उसे अपनी पहली रात की याद आती है और उसका मन कड़वाहट से भर जाती हैं--

" यह रात उसके जीवन में भी आयी थी, पर कितनी भिन्न, कितनी अलग ! उस रात में जरा भी सुगन्ध नहीं थी, जरा-सी मधुरता नहीं थी।"[१]

२.२.४.५ *संकेतात्मक विधि* -

इसमें चरित्रों का सीधा वर्णन न करके सांकेतिक ढंग से वर्णन किया जाता है। इसके प्रयोगद्वारा कुछ विशेषप्रकार का प्रभाव उत्पन्न होता है।

तुषार के जाने के बाद तहमीना की निराश स्थिति का वर्णन इस प्रकार किया है -

" दर्द का जहर छातीपर जमा हो गया था और अब तहमीना को साँस लेने में कट हो रहा था, हर साँस के साथ दर्द का जहर सारे शरीर में फैल जाता था। मन हताश, थके, बूढे, बीमार व्यक्ति-सा बार-बार हाथ टेक बैठ जाता ।"[२]

२.२.४.६ *भावात्मक विधि* -

इसमें पात्रों के अंत में उठनेवाले भावों का विश्लेषण किया जाता है।

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ ११०।*

२ *वही, पृष्ठ २१६।*

" उसने जान लिया था मन के सुख के लिए वह कितना भटकी है, पर सुख-शांति कहीं नहीं । दूसरों के सहारे जो बेल चढ़ती है, वह हवा के तेज झोंके से गिर भी जाती है। उसे दृढ होकर, ठोस होकर जीना है। मन की शांति उसे कहीं कहीं मिलेगी, उसके लिए अपने ही मन में झाँकना होगा, सँभालना होगा । कोई भी उसका हाथ पकड़कर उसे गंगा पार नहीं करायेगा।''[१]

२.२.४.७ *स्वगतात्मक विधि* -

इसमें पात्र अपनी स्थिति या किसी पात्र के गुण-दोष के बारे में प्रकट रूप से न कह कर मन ही मन में सोचता है, या बुदबुदाता है--

" यदि डॉक्टर ने सलाह नहीं दी तो वह अपने एक भी बच्चे का बाप नहीं पायेगा । हर तरह, हर तरफ से देखा जाये तो विपुल को सिवाय नुकसान के फायदा कुछ नहीं। बहुत बड़ा जुआ खेलने जा रहा है विपुल, जीत किसकी होगी यह तो समय ही बता पाएगा।''[२]

इसके अतिरिक्त तहमीना के चित्रण में प्रतीकात्मक विधि का प्रयोग लेखिका ने किया है। उपर्युक्त विवेचन के आधारपर स्पष्ट होता है कि पात्र और चरित्र में ' अकेला पलाश ' सफल उपन्यास है।

२.३ *संवाद या कथोपकथन* -

" कथोपकथन द्वारा कुछ विचारों को सजीवता देने में सरलता होती है। नाटकों में जो वस्तु अभिनय द्वारा व्यक्त होती है, उपन्यासों में

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ २३२।*

२ *वही, पृष्ठ २१६।*

बहुत कुछ कथोपकथन द्वारा लायी जाती है।''[१] लेखक का उपन्यास में संवाद चयन के पीछे अपना एक निश्चित उद्देश्य होता है। जैसे --

१ कथानक का विकास करना ।

२ पात्रों की व्याख्या कर उनका विकास करना ।

३ पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को उद्घाटित करना।

४ पात्रों के अन्तर्मन के द्वंन्द्व को अभिव्यक्त करना ।

५ पात्रों के मंतव्य को व्यक्त करना।

६ दृश्यों को सजीव बनाना।

७ उद्देश्य को स्पष्ट करना आदि ।

कथोपकथन योजना के प्रमुख गुण है उपयुक्तता, स्वाभाविकवता, संक्षिप्तता, उद्देश्यपूर्णता, संबंधता, अनुकूलता, मनोवैज्ञानिकता तथा भावात्मकता आदि । उक्त गुणों को मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यास ' अकेला पलाश ' में देखा जा सकता है।

डॉ. शांति मलिक ने संवादों के निम्न प्रकार गिनाएँ है -" व्याख्यात्मक, भावात्मक, आवेशात्मक, नाटकीय, हास्यप्रधान, व्यंग्यात्मक, व्यावहारिक, उपदेशात्मक, गंभीर, तर्कपूर्ण, मार्मिक, आलंकारिक आदि ।''[२]

मेहरुन्निसा परवेज के ' अकेला पलाश ' में संवादों के निम्नलिखित प्रकार उपलब्ध हो जाते हैं -

---

१ *डॉ. प्रतापनारायण टण्डन - हिंदी उपन्यास कला, पृष्ठ २१६।*

१ *डॉ. शान्ति मलिक - हिंदी नाटकों की शिल्पविधि का विकास, पृष्ठ १४ से २७३।*

२.३.१ *व्याख्यात्मक संवाद* -

कलात्मक और सम्प्रेषण के साथ मर्मस्पर्शी घटना तथा किसी विषय-वस्तु का उद्‌घाटन एक ही वाक्य में करना व्याख्यात्मक संवाद है। ऐसे संवादों में मन-मानस में उठे हुए अनेकविध भावों को उजागर किया जाता है।

" तुम्हें इस दायरे से बाहर आना है और इस टेन्शन को बर्दाश्त करना है। तुम एक हो पर तुम्हें कई की ड्यूटी निभाना है और निभाना होगा, यह मत भूलो कि इसके लिए तुम्हें सिर्फ इतना करना होगा कि बातों को उतनी गंभीरता से न लो कि वह तुम्हें पिंच करती हुई तुम पर हावी हो जाएँ।सहज बनो और सरलता से जीना सीखो तो सब कुछ आसान लगने लगेगा ।''[१]

२.३.२ *भावात्मक संवाद* -

ऐसे संवाद पाठकों के दिलो-दिमागपर जबरदस्त आघात करने में तथा लेखक की मनोभावभूमिपर खड़ा कर देने की क्षमता रखते है। इन संवादां में सरलता, सरसता, संवेदशीलता एवं प्रवाहमयता होती है।

" अगर मेरे आगे तुषार से सम्बन्ध हो जाएँ, तो तुम इसे किस ढंग से लोगें ?''

" मैं समझा नहीं दीदी ।''

" यही कि तुम, मुझे बदचलन समझोगे क्या ? ''

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ ३३।*

" नहीं .... मैं तो यही कहूँगा कि दीदी ने देर से सही, पर सही कदम उठाया है। अब मेरी दीदी घुट-घुटकर नहीं मरेगी, अब उसने भी खुली हवा में साँस लेना सीख लिया है।''

" नहीं, घुटना तो मुझे हर हालत में है, हम पैदा ही इसलिए हुए हैं, बस यही है कि पल-भर को हँस लेंगे और क्या ।''[१]

२.३.३ *आवेशात्मक संवाद* -

इन संवादों की शैली ओज गुण से परिपूर्ण होती है । ऐसे संवाद पाठकों की धमनियों का खून खौल देने में समर्थ होते है। इसके अन्तर्गत पात्रों उत्तेजनापूर्ण मनोभावों को प्रकट किया जाता है।

" तुषार को मैं पत्र लिखने वाला हूँ, आपसे इस भेंट की चर्चा क्या उसे लिख दूँ ? ''

" नहीं, अब उसे मेरे कोई भी संबंध में कुछ भी पूछने का हक नहीं, जानने का हक नहीं ।''

" इतना कठोर मत बनिये आप तहमीना जी ।''

" कठोर बनना तो उसीने मुझे सिखाया है ।''

" मगर इस बात को जानने का हक तो उसे है ही ।''

" न यह दर्द अब सिर्फ मेरा है, इसे अब आप मुझ तक ही रहने दीजिए ।''

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज* - अकेला पलाश, *पृष्ठ १५२।*

" मगर आप तुषार की गलतियों की काफी बड़ी सजा दे रही है।''

" सजा, कौन भोग रहा है, आप जान सके हैं ? चेहरे पर झूठ का मुखौटा चढ़ाये सारी जिंदगी जीना पड़ेगा, क्या इससे बड़ी सजा दुसरी हो सकती है ? जिंदगी के चैलेंज को स्वीकार कर अपने पैरों पर खड़ा होना ज्यादा कष्टदायक स्थिति है न कि जिन्दगी से भागनेपर, मुँह छुपाकर भागनेवाले क्या सजा भोगेंगे ।''[१]

२.३.४ *मनोवैज्ञानिक संवाद* -

दूसरों की बातों को अनसुना करते हुए अपने मन की बातों में या विचारों में उलझकर उसी की अभिव्यक्ति करना या शून्य में ताकते हुए अन्तर्द्वन्द्व से पूर्ण विचारों की अभिव्यक्ति ही मनोवैज्ञानिक संवाद कहलाते हैं। मनोवैज्ञानिक संवादों में मनोविज्ञान के सिध्दान्तों का आधार लिया जाता है। हर बात का विश्लेषण उन्हीं सिध्दांतों के आधारपर करने का प्रयास किया जाता है।

" आप डॉक्टर है, आप केवल नसें काटना और उन्हें सीना जानती हैं। आपकी दुनिया अलग है और हमारी अलग। हमारे लिए शरीर का घाव कोई मायने नहीं रखता, क्योंकि वह उतना कष्ट नहीं देता जितना मन का दर्द। आपके यहाँ आदमी सिर्फ एक बार मरता है, हमेशा के लिए, लेकिन हमारी दुनिया में आदमी बार-बार मरता है और बार-बार जीने को मजबूर होता है। या साफ बात कहें, वह मरकर भी जिन्दा रहता है।''[२]

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ २२३।*

२ *वही, पृष्ठ १७५।*

२.३.५ *नाटकीय संवाद* -

इन संवादों में पात्र अपने विचारों को एक के बाद एक संक्षिप्त और नाटकीय रूप में प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में नाटकीय संवादों की बहुलता दिखाई देती है। इनकी वजह से उपन्यास में रोचकता और प्रवाहशीलता स्थापित हो गई है। जैसे --

" अभी क्यो आये हो ? ''

" वाह, तो मेरे आने पर समय की पाबँदी है क्या ? लो तो मैं उठकर चला जाता हूँ । ''

" अरे, मैंने जाने को तो कहा नहीं तुमसे ।''

" पर बैठने को भी तो नहीं कहा न, मैं तो जबर्दस्ती अंदर घुस आया हूँ ।''

" तुम कोई गैर हो, जो तुम्हें बैठनो को कहना पड़ेगा ?''

" लो अभी थोड़ी देर पहले क्या कह रही थी और अब क्या कह रही हो ? यह औरत जात बड़ी अजीब होती है।''[१]

२.३.६ *हास्यव्यंग्यात्मक संवाद* -

जिन संवादों में मनोविनोद किया जाए, वे हास्यपूर्ण संवाद कहलाते हैं। किसी कमजोरी के संबंध में, नफरत ,ईर्ष्या अादि भावना से मजाकपूर्ण हृदय को ठेंस पहुँचाने वाली बातों का जिक्र किया जाता है, उन्हें व्यंग्यात्मक संवाद कहते हैं। जैसे -

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज -अकेला पलाश, पृष्ठ १५३।*

" नमस्ते अंकल ।''

" नमस्ते आप तो बहुत होशियार हैं, हैं न ।''

" हाँ, मैं बिल्ली भी बना लेता हूँ। ''

" सचमुच की या पेन्सिल की ।''

" पेन्सिल की ।''[१]

२.३.७ *गंभीर संवाद* -

गहन, दार्शनिक और अध्यात्मिक विचारों को जहाँ प्रकट किया जाता है वहाँ, गंभीर संवादों की योजना की जाती है। इन संवादों की शैली से गूढ़ता, गहनता, तात्विकता एवं गंभीरता प्रत्यक्ष परिलक्षित होती है। जैसे --

" अरे, कोर्ट मेरिज कर रही है नाहिद ? मगर किससे ? ''

" डॉक्टर अग्रवाल से, दोनों की पुरानी जान पहचान थी । आप चलेंगे न ? ''

" मगर आज तेा मुझे ऑफिस में काम है। और तुम भी मत जाना, पता है ऐसी शादियाँ खतरनाक मोड़ ले लेती है, हिन्दू - मुस्लिम दंगे तक हो जाते है। ''

" मैं नहीं जाऊँगी तो बोलो उनके साथ कौन होगा ? आपका ऑफिस में काम है आप मत जाइये, या समय निकाल कर आ जाइयेगा, मगर मुझे मत मना करिए, वरना मैं नाहिद

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १२१।*

बाजी की निगाहों से हमेशा-हमेशा के लिए गिर जाऊँगी। आदमी ऐसे समय पर ही पहचाना जाता है।''[१]

२.३.८ *मार्मिक संवाद* -

जिसमें जीवन की यथार्थ बातों को प्रभावकारी शब्दों में अभिव्यक्त करते समय सच्चाई, या जीवन का कटु सत्य उद्‌घाटित हो, मन-मसितष्क को सोचने के लिए बाध्य करते हो। इसी संवादों को मार्मिक संवाद कहते हैं। जैसे-

" पगड़ंडियाँ पल-भर साथ चलकर वीराने में खो जाती है। आदमी यह जानता है कि यह आगे गुम हो जायेगी, तब भी उसपर चलता है। मनुष्य का मन भी क्या होता है न ? मेरे जीवन में कष्ट ही कष्ट हैं, कहीं छाँव नहीं, पर नहीं मैं थकूँगी नहीं, मुझे चलना है, चलती रहूँगी ।''

" मैने बेकार की बातें करके आपको दु:खी कर दिया न? ''

" न, ऐसा मत सोचो, यह दुखड़ा अंत तक साथ रहेगा । जानते हो चिंता और चिता में बस एक बिन्दी का, छोटे से नन्हे शब्द का ही अंतर है।''[२]

२.३.९ *व्यावहारिक संवाद* -

नित्य प्रति के व्यववहार में प्रयुक्त होनेवाले संवाद ही व्यावहारिक संवाद कहलाते हैं। इनमें न अलंकारों की अधिकता होती है, न

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १०६।*

२ *वही, पृष्ठ १५२।*

काव्यत्व का अत्याधिक आग्रह होता है। इन संवादों में भाषा की सजीवता और प्रवाह देखने को मिलता है। जेसे -

" जीवन में वैसे भी हमें अकेले तो चलना ही था, पर यह एहसास तो था कि कोई हमारे साथ है, हमारे पीछे खड़ा है। अब जबकि यह एहसास खत्म हो गया है तो झूठे आदर्शो को ओढ़ने से क्या फायदा ? अब जो सहना है मुझे अकेले सहना है। " वही ठीक है आपके हक में, अब बाम बहाने से कोई फायदा नहीं, यही समझिये कि वह सब भूल थी ।''[१]

२.३.१० *तर्कपूर्ण संवाद* -

यह संवाद पाठकों के लिए उपयुक्त नहीं होते । क्योंकि इन संवादों में जटिलता एवं दुर्बोधता होती है। असाधारण पाठकों के लिए ये सुबोध एवं ग्राह्य होते है। ये संवाद मनुष्य को सोचने के लिए बाध्य करते हैं। कभी-कभी सामान्य आदमी भी तर्क करने लगता है। जैसे --

" कोई व्यक्ति ऊँचे पद पर है उसका बाहर नाम है, तो इसका क्या यह अर्थ है कि वह अपनी सारी भावनाओं को मार दे ? उसे प्यार करने का कोई हक नहीं ? उसे जीने का कोई हक नहीं ? वह लोक-लाज के कारण क्या घुट-घुट कर मर जाये ? क्या उसके बड़े होने का, शोहरत हासिल करने का यह दंड़ है ? क्या वह एक आम आदमी की तरह, आम इन्सान की तरह नहीं जी सकता ? उसे हँसने का कोई अधिकार नहीं, अखिर ऐसा क्यो ? '' " इस बात का मेरे पास कोई उत्तर नहीं है, क्योंकि मैं भी उसी मतलबी दुनिया का एक व्यक्ति हूँ।''[२]

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ २२३।*

२ *वही, पृष्ठ २२३।*

२.३.११ *उपदेशात्मक संवाद* -

ये संवाद अभिधात्मक शैली में होते हैं। जीवन के नीति-मूल्य, आदर्श इन संवादों से व्यंजित किये जाते है। पाठकों को अनादर्श, अज्ञान, अधर्म से बचाना इन संवादों का प्रयोजन होता है। लेकिन इन संवादों का प्रयोग उतना ही होना चाहिए जितना कथा-विकास के लिए आवश्यक हो ।

" यह ठीक है कि तुम्हें धूप लगी है और तुम्हें छाया की सख्त जरूरत है, पर छाया के लिए ऐसे पेड़ के नीचे पनाह लो जो तुम्हें वास्तव में छाया दे सके। ऐसे पेड़ के नीचे मत खड़ी हो जो तुम्हें छाया भी न दे सके बल्कि उल्टा तुम्हारे ऊपर गिरे और तुम्हें तबाह कर दे । विनोद दो बच्चों का बाप है, उसकी पत्नी है, उसकी अपनी जिम्मेदारियाँ है, वह तुम्हें घर मे नहीं रख सकता । ऐसे रिश्तों से क्या फायदा जो सहारा न दे सकें ।"[१]

२.३.१२ *आलंकारिक सवांद* -

जिन संवादों में अलंकारों से युक्त भाषा होती है तथा अपने विचारों को अंलकारों की सहायता से कलात्मक या सुंदर ढ़ंग से प्रस्तुत किया जाता है, वहीं आलंकारिक संवाद दिखाई देते है। जैसे -

" औरत की जिंदगी उस पौधे की तरह है जिसे एक जगह से उखाड़ कर नई जगह लगाया जाता है। नई जमीन में अपनी जड़े जमानें में उसे उतना ही समय लगेगा न, यदि उसी प्रकार का वातावरण, पानी और पर्याप्त खाद नहीं मिला तो हो सकता है वह नयी जगह लग ही न

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १०।*

पाये और सूख जायेगा ।''[१]

२.३.१३ *उद्देश्यपूर्ति में सहायक संवाद* -

उपन्यास में प्रत्येक कथोपकथन सोद्देश्य होना चाहिए । उद्देश्य रहित संवाद फीके और अनावश्यक प्रतीत होते है। सोद्देश्य संवाद कथा विस्तार, पात्रों की मनस्थिति और वातावरण का चित्रण करने में सक्षम होते हैं। इनसे लेखक का प्रतिपाद्य स्पष्ट होता है।

' अकेला पलाश ' उपन्यास के कथोपकथन सोद्देश्य है। वह लेखिका के उद्देश्य को सर्वत्रपूर्ण करते हैं -

" सारी सुंदरता ईश्वर ने स्त्री को दे दी है, पर जितनी सुंदरता उसने स्त्री को दे दी है, उसे अपनी सुरक्षा के लिए पुरूष की शरण में जाना पड़ता है, पुरूष का संरक्षण अनिवार्य है, वह अपनी सुरक्षा खुद नहीं कर पाती। वह जीवन भर असुरक्षित हती है। असुरक्षा का भय उसे जीवन-भर भयभीत किये रहता है।''[२]

२.३.१४ *चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट करने वाले संवाद* -

संवादों का मुख्य लक्ष्य चारित्रिक विशेषताओं का उद्घाटन करना है। उपन्यास के कथोपकथन ऐसे हो जिनमें पात्रों के चरित्रों का उद्घाटन करने की क्षमता हो । पात्रों की मनोदशा, आन्तरिक ऊहापोह, मनोभाव इस प्रकार के कथोपकथनों से जाने जा सकते है। जैसे -

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज- अकेला पलाश, पृष्ठ १४६।*

२ *वही, पृष्ठ १६४।*

" विपुल ऐसा सागर है जहाँ हर मैली नदी गिर कर पवित्र हो जाती है। वह बहुत सुलझ विचार का और दूरदर्शी लड़का है। वह एक अच्छा पति,अच्छा पिता होगा यह निश्चित है। वह बहुत बड़े कलेजे का आदमी है।"[१]

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि उपन्यासकार मेहरुन्निसा परवेज ने काफी सोच-समझकर विवेच्य उपन्यास में संवादों का चयन किया है।संवाद और कथोपकथन दृष्टि से ' अकेला पलाश ' निश्चित ही सफल बन गया है।

२.४ *भाषा-शैली* -

२.४.१ *भाषा* -

भाषा-शैली उपन्यास का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। उपन्यास साहित्य सृजन के प्राथमिक काल में भाषा का इतना महत्त्व नहीं था। भाषा के बजाय विषय-वस्तु को प्राधान्य दिया जाता था। आज-कल उपन्यास में भाषा का अपना अलग स्थान है। भाषा के जरिए उपन्यास कार पाठकों पर विशेष प्रभाव डाल सकता है। लेखक सामान्य, सुलभ, भाषा-शैली द्वारा पात्रों की सामान्य विशेषताओं पर प्रकाश डालता है। लेखक विशेष प्रभाव के लिए सामान्यत: साहित्यिक भाषा को त्याग बोलचाल की भाषा, अंचल विशेष की भाषा को भी अपनाता है।

डॉ. सुरेश सिन्हा का मत दृष्टव्य है -

" प्रत्येक जीवन परिवेश को अभिव्यक्त करने के लिए भाषा का अपना रूप होता है। परिवेश के परिवर्तन के इन सूत्रों को न पहचान

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ २१२।*

सकना अविवेकपूर्ण दूराग्रह है। जीवन परिवेश के बदुल जानेपर भी जब हम उसी भाषा का प्रयोग करते रहते हैं तो विडम्बनाएँ उत्पन्न होती हैं और मामूली-सा कथ्य भी अविश्वसनीय या चौंकनेवाला बन जाता है और वह हमसे कोई रिश्ता जोड़ नहीं पाता । कथ्य जितना ही प्रामाणिक होगा भाषा उतनी ही सहज होगी।''[१]

प्रस्तुत उपन्यास में मेहरुन्निसा परवेज ने सरल, सरस और प्रवाहपूर्ण भाषा को अपनाया है। इसके साथ ही उपन्यास में सरल स्वाभाविक भाषा, गम्भीर एवं परिष्कृत भाषा, उपदेशात्मक भाषा तथा विविध शब्द, मुहावरें-कहावतें अदि का भी प्रयोग हुआ है।

२.४.१.१ *शब्दप्रयोग के विभिन्न रूप* -

शब्द भाषा की एक महतत्वपूर्ण इकाई है। उपन्यासकार अपने उपन्यास की भाषा को सुंदर सहज बनाने के लिए शब्दों के कई रूपों का प्रयोग करता है।

२.४.१.१.१ *तत्सम शब्द* -

' अकेला पलाश ' में निम्नलिखित तत्सम शब्दों का प्रयोग पाया जाता है -

---

१ *डॉ. सुरेश सिन्हा - हिंदी उपन्यास, पृष्ठ ३६१ से ३६२।*

मन''[१], आत्मा ''[२] , भगवान ''[३] , सुदर ''[४] , आयु ''[५] , स्वामी ''[६] आदि ।

२.४.१.१.२ *तद्भव शब्द* -

' अकेला पलाश ' उपन्यास में निम्नलिखित तद्भव शब्दों का प्रयोग किया गया है - सिंदूर ''[७], बटोरना ''[८], बाड ''[९], काटे ''[१०], हाथ ''[११] आदि।

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ ४४।*

२ *वही, पृष्ठ ४६।*

३ *वही, पृष्ठ ४७।*

४ *वही, पृष्ठ ४१।*

५ *वही, पृष्ठ ६६।*

६ *वही, पृष्ठ ६२।*

७ *वही, पृष्ठ ६१।*

८ *वही, पृष्ठ १०८।*

९ *वही, पृष्ठ ६६।*

१० *वही, पृष्ठ १७१।*

११ *वही, पृष्ठ १५३।*

२.४.१.१.३ **देशज शब्द –**

' अकेला पलाश ' मे ज्यादात्तर पात्र शिक्षित है। लेकिन इसमें आदिवासियों का चित्रण होने के कारण कुछ देशज शब्दों का प्रयोग मिलता है जैसे –

पत्तों ''[१], चाटा ''[२], बीमार ''[३], बिस्तर ''[४], मतलब ''[५] आदि ।

२.४.१.२ ***विदेशी शब्द –***

२.४.१.२.१ ***अरबी शब्द –***

' अकेला पलाश ' में कई अरबी शब्दों का प्रयोग दिखायी देता है। जैसे – सलाम''[६], बदनाम ''[७], लिफाफा''[८] , रोब ''[९],

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज – अकेला पलाश, पृष्ठ १५८ ।*

२ *वही, पृष्ठ २१३ ।*

३ *वही, पृष्ठ २१२ ।*

४ *वही, पृष्ठ २१० ।*

५ *वही, पृष्ठ ८१।*

६ *वही, पृष्ठ २२४।*

७ *वही, पृष्ठ १०।*

८ *वही, पृष्ठ ६।*

पाजामा ''[२] आदि ।

फारशी शब्द –

' अकेला पलाश ' में अरबी शब्दों का प्रयोग भी पर्याप्त मात्रा में हुआ है। जैसे – अरमान ''[३] , शायद ''[४] , शोर ''[५] , बगीचा ''[६] , चेहरा ''[७] आदि ।

२.४.१.२.२ उर्दू शब्द –

' अकेला पलाश ' उपन्यास की लेखिका मेहरुन्निसा परवेज मुस्लिम होने के कारण और उपन्यास के पात्र कुछ पात्र भी मुस्लिम होने के कारण कुछ उर्दू शब्दों का प्रयोग मिलता है। जैसे –

चपरासी ''[८] , सिपाही ''[९], सरकार ''[१] आदि ।

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज – अकेला पलाश, पृष्ठ ११२।*

२ *वही, पृष्ठ १७०।*

३ *वही, पृष्ठ १७३।*

४ *वही, पृष्ठ १५८।*

५ *वही, पृष्ठ १३४ ।*

६ *वही, पृष्ठ २०६।*

७ *वही, पृष्ठ ८६।*

८ *वही, पृष्ठ १२२।*

९ वही, पृष्ठ, १००।

२.४.१.२.३ *तुर्की शब्द* –

प्रस्तुत उपन्यास में तुर्की शब्द भी मिलते है। तलाश ''[२] , काबू ''[३] , चम्मच ''[४] आदि ।

२.४.१.२.५ *अंग्रेजी शब्द* –

' अकेला पलाश ' में ज्यादातर पात्र शिक्षित होने के कारण अंग्रेजी शब्दों की भरमार दिखायी देती है। जैसे –

टाइम ''[५], टयूटी ''[६], इन्ट्रेस्ट ''[७], शिफ्ट''[८], स्ट्रडेण्ट''[९], इन्टरव्यू''[१०] , ड्रायव्हर ''[१] ,

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज – अकेला पलाश, पृष्ठ १००।*

२ *वही, पृष्ठ १४६।*

३ *वही, पृष्ठ २२।*

४ *मेहरुन्निसा परेवज – अकेला पलाश, १२।*

५ *वही, पृष्ठ १५।*

६ *वही, पृष्ठ १६।*

७ *वही, पृष्ठ ३५।*

८ *वही, पृष्ठ ३८।*

९ *वही, पृष्ठ ४८।*

१०. वही, पृष्ठ ७३।

कंट्रोल ''[२], शॉक ''[३] , ट्रांसफर ''[४] , टेबल ''[५], कॉलेज ''[६], हेल्थ ''[७] आदि ।

२.४.१.३ *अन्य शब्द* -

भाषा में सहज स्वाभाविकता और पात्रानुकूलता की दृष्टि से लेखिकाने अनेक प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया है। जैसे -

२.४.१.३.१ *ध्वन्यार्थक शब्द* -

' अकेला पलाश ' में कहीं कहीं ध्वन्यार्थक शब्दों को इस्तेमाल किया गया है। जैसे -- हवाकी ध्वनि " साँय-साँय ''[८]

२.४.१.३.२ *निरर्थक शब्द* -

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ ६१।*

२ *वही, पृष्ठ ६५।*

३ *वही, पृष्ठ १०४।*

४ *वही, पृष्ठ ११५।*

५ *वही, पृष्ठ १२५।*

६ *वही, पृष्ठ १२६।*

७ *वही, पृष्ठ १५८।*

८. वही, पृष्ठ १७८।

SARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

निरर्थक शब्दों का कोई अर्थ तो नहीं होता । लेकिन उपन्यास में प्रवाह या गति लाने में ऐसे शब्द सहायक होते है। ' अकेला पलाश ' में निरर्थक शब्दों का पर्याप्त प्रयोग दिखायी देता है। जैसे - सजी-बनी ''[१] , अंट-शंट ''[२], पाप-वाप ''[३] आदि ।

२.४.१.३.३ *अपशब्द* -

साहित्य में अपशब्द अवांछनीय होते है। किन्तु कभी-कभी पात्रानुकूल भाषा के प्रयोग में ऐसे शब्द आवश्यक महसूस होते हैं। ' अकेला पलाश ' में ज्यादातर शिक्षित पात्र होने के कारण ज्यादा अपशब्द नहीं मिलते। लेकिन कही कही इसका प्रयोग मिलता है । जैसे --

साला ''[४], बेशरम ''[५], बेवकूफ ''[६]

२.४.१.३.४ *द्विरूक्त शब्द* -

भाषा के सौन्दर्य में अभिवृध्दि लाने के लिए ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है। किन्तु इनकी अतिशयता से भाषा-प्रवाह में बाधा भी

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ ५१।*

२ *वही, पृष्ठ ३०।*

३ *वही, पृष्ठ १३७।*

४ *वही, पृष्ठ ८५।*

५ *वही, पृष्ठ १३६।*

६ *वही, पृष्ठ २००।*

पहुँच सकती है। " अकेला पलाश '' में मेहरुन्निसा जी ने कहीं-कहीं ऐसे शब्दोंका प्रयोग भाषा को सहज, प्रवाहपूर्ण और स्वाभाविक बनाने के लिए किया हुआ दृष्टिगोचर होता है। जैसे --

खुश-खुश ''[१], बीच-बीच''[२], ऊँचे-ऊँचे ''[३], धीरे-धीरे ''[४] आदि।

२.४.१.४ *भाषा-सौन्दर्य के साधन* -

किसी भी रचना की सार्थकता उसमें व्यक्त विचार और भावों को सहज, सुन्दर और आकर्षक ढ़ंग से अभिव्यक्ति को सुंन्दर और आकर्षक बनाने के लिए भाषा के विभिन्न उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। अलंकारिक भाषा, आवेशात्मक भाषा,सहज भाषा, सहज-स्वाभाविक भाषा, पात्रानुकूल भाषा, मुहावरें-कहावतें, सूक्तियाँ आदि द्वारा भाषा को सुन्दर बजाया जाता है।

मेहरुन्निसा परवेज जी के आलोच्य उपन्यास में कुछ प्रमुख उपकरण सार्थकता के साथ प्रयुक्त हए हैं।

२.४४.१.४.१ *अलंकारिक भाषा* -

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १३४।*

२ *वही, पृष्ठ १५८।*

३ *वही, पृष्ठ १५९।*

४ *वही, पृष्ठ १९१।*

लेखिका ने अपनी अभिव्यक्ति को अधिक आकर्षक बनाने के लिए निम्नलिखित अलंकारों का प्रयोग किया है।

(म) **विशेषण -**

" माँग का सिंदूर, सख्त आवाज, दबे पाँव, बन्द आँखे, धीमी आवाज, आदि "[१]

(य) रूपक -

" तुषार ने बहुत धीरे से उसे अपनी ओर खींचा, इतने धीरे मानो वह काँच की बनी हो और जसा-सा धक्का लगने पर चूर-चूर हो जायेगा। ''[२]

(र) उपमा-

" पत्तों में छिपा यह पेड़ कितना भला लगता है,जैसे कोई नवयौवना पैर से लेकर सर तक गहनों से लदी खड़ी हो ''[३]

२.४.१.५ *भाषा के रूप* -

' अकेला पलाश ' में भाषा के कई रूप देखने को मिलते हैं। जैसे -

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ -*

२ *वही, पृष्ठ १३८।*

३ *वही, पृष्ठ २३१।*

२.४.१.५ *आवेशात्मक भाषा* –

आवेशात्मक भाषा का प्रयोग निम्न प्रकार से हुआ हैं –

" मैं तुम्हारी पत्नी जरूर हूँ और समाज ने मेरे शरीर के साथ...हर प्रकार का खिलवाड करने की आथर्टी तुम्हें दे रखी है, इसका यह मतलब नहीं कि तुम रोज मुझे मारों,रोज मेरी मुत्यु हो । तुम समझते हो, तुम मुझपर दया करते हो । नही में जीवन-भर ऐसेरह लूँगी, पर तुम्हारा कभी-कभार भीख में दिया यह सुख मेरेलिए यातना बन जाता है।"[१]

२.४.१.५.२ *पात्रानुकूल भाषा* –

लेखिका ने उपन्यास को प्रभावपूर्ण और प्रवाहमय बनाने एवं चरित्र विशेष के व्यक्तित्व को उभारने के लिए पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। तहमीना की भाषा में अकेलेपन की घुटन एवं छटपटाहट है, तुषार की भाषा में व्यवहार कुशलता और स्पष्टता है, जमशेद की भाषा में स्वार्थ है,विपुल की भाषा में व्यावहारिकता है, नाहिद की भाषा में गंभीरता है तथा रिंकू की भाषा उसकी आयु,मध्यवर्गीय संस्कारों और मानसिक स्थिति के अनुरूप है। अशिक्षित पात्रों में कचराबाई की भाषा बड़ी ही आकर्षक और मार्मिक है। उपन्यास में प्रयुक्त पात्रानुकूल भाषा के प्रमुख उदाहरण यों है –

" तहमीना – " औरत बहुत भूखी होती है,वह कहीं न कहीं से प्यार चाहती है,ममता चाहती है और मुझे कहीं से कुछ नहीं मिला, यहाँ

---

1 *मेहरुन्निसा परवेज – अकेला पलाश, पृष्ठ ८१।*

तक कि जिन्होंने मुझे पैदा किया उन्होंने भी मुझे ममता, प्यार कुछ नहीं दिया ।''[१]

तुषार - " जिस दिन तुम्हारे नाम पर कोई धब्बा लगेगा, मैं उस दिन अपनेआप पीछे चला जाऊँगा । मैं तुम्हें झूठे आश्वासन देना नहीं चाहता। तुम्हारा भी एक दायरा है। मेरा भी एक दायरा है।''[२]

जमशेद - " मुझे तुम्हारा उसके साथ यह अड्डा जमाना भी पसंद नहीं। कह दो वह रोज-रोज यहाँ न आया करे।''[३]

विपुल -" एम.एस्सी. कर लिया हूँ क्या मेहनत का काम नहीं कर सकता ? अगर मेरा जन्म मजदूर के घर में हुआ होता और मैं अनपढ़ होता, तो मुझे यही काम करना पड़ता न, फिर पढ़-लिखकर मैं ऐसा क्यों नहीं कर सकता? मेरे दोस्त हँसी उड़ाते हैं। उड़ाने दो,कोई वे मेरी जरूरतें पूरी नहीं कर देंगे ।''[४]

नाहिंद - " जिंदगी को कितना आसान समझते थे, दर-असल जिंदगी उतनी सहज नहीं है।''[५]

२.४.१.५.३ *सहज स्वाभाविक भाषा -*

---

२ *वही, पृष्ठ १३७।*

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १६४।*

२ *वही, पृष्ठ ५२।*

३ *वही, पृष्ठ ४६।*

४ *वही, पृष्ठ १७२।*

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

प्रस्तुत उपन्यास में जगह-जगह पर सहज-स्वाभाविक भाषा का प्रयोग दृष्टव्य है -

" मम्मी, कहाँ गये थे आप ? ''

" बेटा, आंटी की शादी थी ना !''

" तो आप मुझे क्यों नहीं ले गये? ''

" बहुत दूर शादी थी ।''

" मम्मी, दूल्हा कौन बने थे ? ''

" अग्रवाल अंकल ।''

" डॉक्टर साहब !''

" हाँ, जो तुम्हें पट्टी बाँध रहे थे चोट लगने पर ।''

" तो अब डॉक्टर आंटी को बाँधेंगे न ! ''[१]

सहज-स्वाभाविक भाषा के कारण उपन्यास सरल और रोचक लगता है।

२.४.१.५.४ *उपदेशात्मक भाषा* -

" पाप वगैरह कुछ नहीं है दुनिया में, जो मन को अच्छा लगता है न वही पुण्य है और जो अच्छा नहीं लगता वह पाप है। तुम इन परिभाषाओं में अपनेको मत बाँधो ।''[२]

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ ११८।*

२ *वही, पृष्ठ १३७।*

२.४.१.५.५ *व्यंग्यात्मक भाषा* –

" यह तो अब रोज होना है। तुम रोज थककर आओगी, आफिस की बातों को लेकर तुम्हारे दिमाग में टेन्शन रहेगा, रात को तुम्हें नींद देर से आयेगी, सुबह तुम देर से उठोगी और इसी तरह रोज मिनी बस छूट जाया करेगी ।"[१] ' अकेला पलाश ' में व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग कम हुआ है।

२.४.१.५.६ *गंभीर एवं परिष्कृत भाषा* –

" तुम्हारे सामने ढेर सारी समस्याएँ आएँगी और तब उनका सामना तुम्हें ही करना होगा । मैं नही रहूँगी और न कोई दुसरा तुम्हारे साथ रहेगा, और सबसे बड़ी बात तो यह है कि दुसरों से तसल्ली लेनेके लिए बात जो तुम सोचती हो न उसे भूल जाओ, वह गलत है। अपने निर्णय खुद लो ।"[२]

' अकेला पलाश ' में गम्भीर एवं परिष्कृत भाषा का अधिक मात्रा में प्रयोग हुआ है।

२.४.१.६ *मुहावरें – लोकोक्तियाँ* –

मेहरुन्निसा परवेज ने ' अकेला पलाश ' उपन्यास में मुहावरे और लोकोक्तियों से युक्त भाषा का प्रयोग किया है। प्रस्तुत उपन्यास में निम्न लिखित मुहावरें है --

---

१ *मेहरुन्निसा परेवज - अकेला पलाश, पृष्ठ ३२।*

२ *वही, पृष्ठ ३३।*

" खाक छानना, नींद हराम होना, रोब जमाना, दिमाग खराब होना, लहूलुहान होना, दाल गलना, आदि ।"[१]

लोकोक्तियाँ -

प्रस्तुत उपन्यास में लोकोक्तियाँ न के बराबर है। इस प्रकार ' अकेला पलाश ' में विविध प्रकार के वाक्यों का प्रयोग मिलता हैं। छोटे और सरल वाक्यों के साथ इसकी भाषा में नाटकीयता, चुटीलापन होने के कारण भाषा सार्थक बन गयी है। इसमें किसी एक भाषा के शब्दों के प्रयोग का आग्रह नहीं है। अरबी, फारसी, उर्दू, अंग्रेजी के शब्द भी अनेक बार आये हैं।

२.४.२ *शैली* -

डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र के अनुसार - " वास्तव में भावाभिव्यक्ति का माध्यम भाषा है और इस रस माध्यम के प्रयोग की रीति या विधि शैली है।"[२]

२.४.२.१ *विश्लेषणात्मक शैली* -

उपन्यास में विचारों के विश्लेक्षण के लिए एक विशेष प्रकार से इस शैली का प्रयोग किया जाता है। इसे विवेचनात्मक या तर्कप्रधान शैली भी कहते हैं।

---

१. मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ -

२. *डॉ दुर्गाशंकर मिश्र - अज्ञेय का उपन्यासस्साहित्य, पृष्ठ ३४।*

" आप गलत सोचती है, यह बड़े लोगों का बड़प्पन है, वह अपने छोटों के आगे झुकना नहीं चाहते। अगर आपको हँसकर विदा कर देते तो उनका बड़प्पन चूर-चूर नहीं हो जाता ? "[१]

' अकेला पलाश ' में विश्लेषणात्मक शैली का अधिक मात्रा में प्रयोग हुआ दृष्टिगोचर होता है।

२.४.२.२ *नाटकीय शैली* -

नाटकों जैसा प्रभाव एवं गति की तीव्रता लाने के लिए इस शैली का प्रयोग किया जाता है।

" हलो, तुषार , कैसे है ? कल तो वाकई आपके आ जाने से रौनक आ गयी।"

" जी हम हैं ही ऐसे, चलिये कम से कम आपने तो समझा, पर और लोग भी हमारी कद्र जानें तब न ।"

" अच्छा ।"[२]

प्रस्तुत उपन्यास में जगह-जहग नाटकीय शैली का प्रयोग मिलता है।

२.४.२.३ *चेतनाप्रवाह शैली* -

---

२ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १०८।*

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १२५।*

आधुनिक काल में प्रयुक्त होनेवाली इस शैली का प्रयोग हमें प्रस्तुत उपन्यास में मिलता है --

नाहिद के विवाह के समय तहमीना का अपने अतीत में खो जाना, तहमीना का तुषार और अपने सम्बन्धों के बारे में सोचते रहना चेतनाप्रवाह शैली का उदाहरण है।

२.४.२.४ *फ्लैश बैक शैली (पूर्व दीप्ति) -*

इसमें जीवन की घटनाओं का वर्णन स्मृति-तरंगों के रूप में होता है। ' अकेला पलाश ' में फ्लैश बैक शैली का उदाहरण दृष्टव्य है --

" आज भी तहमीना की आँखों के सामने माँ की मूर्ति आती है, तो उसे याद आता है, जो अपने अधिकार के लिए, अपने बच्चों के अधिकार के लिए जीवन-भर लड़ती रही । कहते है शादी के बाद औरत का घर हो जाता है। पर यहाँ ऐसी बात नहीं थी । जब भी घर में झगड़ा होता, पिताजी माँ को और बच्चों को घर से बाहर कर देते, चाहे भरी बरसात हो, चाहे कड़कड़ाती ठंड़ हो।''[१]

२.५ *देशकाल तथा वातावरण -*

देशकाल-वातावरण या परिवेश उपन्यास का प्रमुख तत्त्व है। इसका महत्त्व स्पष्ट करते हुए डॉ. भगीरथ मिश्र जी ने लिखा है -" उपन्यास मानव-जीवन का चित्रण है। जिसमें प्रधानतया मनुष्य के चरित्र

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १००।*

का सजीव वर्णन रहता है कि मनुष्य का सम्बन्ध अपने युग, समाज, देश और परिस्थितियों से रहता है अथवा मानव के चरित्र की पृष्ठभमि रूप में देशकाल का चित्रण उसका एक आवश्यक अंग है। ''[१] इससे उपन्यास में सत्यता, सजीवता, कलात्मकता, यथार्थता, रोचकता, प्रभावात्मकता बढ़ती है।

वातावरण के मुख्य प्रकार इस प्रकार हैं -

२.५.१ *आंतरिक वातावरण* -

इसके अंतर्गत तीन भेद किए जाते है --

१. घटनाओं और परिस्थितियों का चित्रण।

२. पात्रों की मानसिक स्थिति का चित्रण ।

३. पात्रों के हाव-भाव आदि ।

२.५.२ *बाह्य वातावरण* -

१. स्थानिय वातावरण ।

२. प्रकृति चित्रण ।

३. सामाजिक परिस्थितियाँ।

४. राजनीतिक परिस्थितियाँ।

५. आर्थिक परिस्थितियाँ आदि ।

---

२ *डॉ. भगीरथ मिश्र - काव्यशास्त्र, पृष्ठ ८०।*

२.५.१ *आंतरिक वातावरण* -

२.५.१.१ *घटनाओं और परिस्थितियों का चित्रण* -

उपन्यासकार पात्रों के अंतर्मन से उद्‌भूत क्रिया-प्रतिक्रियाओं को अभिव्यक्त करने के लिए घटनाओं परिस्थितियों का चित्रण करता है। इससे आंतरिक वातावरण मूर्त होता है।

' अकेला पलाश ' में नाहिद का तहमीना को समझाने वाला दृश्य, जमशेद और तहमीना में शारीरिक सुख को लेकर होनवाली बहस का दृश्य, तहमीना के विवाह के समय का दृश्य, नाहिद के घर छोड़कर जाते समय का दृश्य आदि का चित्रण करते समय पृष्ठभूमि पर विशेष ध्यान रखा है और साथ ही घटनाओं का यथार्थ चित्रण किया है। मेहरुन्निसा जी ने तुषार के कमरे का जो वर्णन किया है उससे वातावरण सजीव और स्वाभाविक बन पड़ा है। जैसे -

" कमरा काफी बड़ा था, एक कोने में पढ़ने का बड़ा-सा टेबल लगा था, जिसपर ढेरसारी पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ रखी थी, टेबल से लगी रैक में देर सारी किताबें सजी हुई थी और उससे भोड़ा हटकर एक आराम कुर्सी रखी थी। जिसपर काला पालिश चढ़ा हुआ था। एक कोने में ड्रेसिंग टेबल रखा था, वहीपर एक छोटासा कालीन बिछा हुआ था और वहीं से लगकर एक बड़ी-सी कपड़ों की अलमारी रखी थी । रैक पर जहाँ किताबें सजी हुई थी उसके एक तरफ भगवान की छोटी-सी मूर्ति रखी हुई थी जहाँ माला और कुछ फूल रखे हुए थे। पलंगपर साफ सुथरी चादर रखी हुई थी पायताने, वही छोटे से टेबलपर जग में ठँका पानी रखा था। "[१]

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १८८।*

२.५.१.२ *पात्रों की मानसिक स्थिति का चित्रण -*

पात्रों की मानसिक स्थिति का चित्रण करने के लिए भी उपन्यासकार एक प्रकार की पृष्ठभूमि का निर्माण करता है। यह मन-स्थिति पात्रों का अंतरंग कहलाती है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने तहमीना की मानसिक स्थिति का सजीव चित्रण किया है । जैसे --

" जीवन इस तरह वबाल लगेगा, बंधन लगेगा उसने कभी सोचा नहीं था और अब लग रहा था सब त्यागकर कहीं भी चले जायें, मन की शांति उसे कहाँ मिलेगी, किस दरवाजे मिलेगी, किस मंदिर में, किस मस्जिद में ? काश! कि ऐसा होता मन कस यह दर्द खत्म हो जाता, यह कष्टदायक यात्रा खत्म हो जाती । मौत अच्छी होती है, कम से कम मनो मिट्टी तले से दर्द इतना इस तरह उभरता नहीं है! पर अगर वहाँ भी शांति न मिली तो ? "[१]

२.५.१.३ *पात्रों के हावभावों का चित्रण -*

पात्रों के मनोभावों का वर्णन दो ढंग से होता है। एक तो संवादों के माध्यम से और दुसरे विश्लेषण के माध्यम से । मेहरुन्निसा परवेज पात्रों के दोनों रूपों के हाव-भाव का वर्णन करने में सफल हुई है। निम्नलिखित उदाहरण दृष्टव्य है जैसे --

" मन एकदम अशांत था। अजीब सी बेचैनी उसे घेरे थी । हार कर वह उठी और कमरे का दरवाजा बंद कर बरामदे से नीचे उतर आयी और महुए के पेड़ के नीचे वह हाथ बाँधे टहलती रही । टहलने से

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ २२५।*

भी राहत नहीं मिली तो वह अँधेरे महुए के पेड़ से टिककर खड़ी हो गयी । ''[१]

२.५.२ *बाह्यवातावरण की सृष्टि* -

उपन्यास में आंतरिक वातावरण की तरह ही बाह्यवातावरण में प्रकृति, स्थान, सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियोंका विशेष ध्यान रखा जाता है। ' अकेला पलाश ' में प्राकृतिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक धारणाओं का चित्रण हुआ है।

२.५.२.१ *स्थानीय वातावरण* -

उपन्यास की विषयवस्तु की प्रभावात्मकता के लिए स्थानिय वातावरण का विशेष महत्व होता है ।

' अकेला पलाश ' में स्थानीय वातावरण का वर्णन न के बराबर है। फिर भी उपन्यास की रोचकता, प्रभावात्मकता, स्वाभाविकता में कोई बाधा नहीं आई है।

२.५.२.२ *प्रकृति-चित्रण* -

उपन्यासकार अपने उपन्यास में प्रकृति के विविध रूपों का चित्रण वातावरण निर्मिती या पृष्ठभूमि के निए करते हैं। डॉ. प्रतापनारायण टंडन जी इस बारे में लिखते है - " प्राकृतिक के अंतर्गत कभी-कभी उपन्यासकार अपनी कथा के पात्रों के सुख-दु:ख के साथ प्रकृति की समता विषमता को बड़े नाटकीय ढंग से प्रस्तुत करता है। इसीसे घटना की

---

२ *वही, पृष्ठ २२६।*

प्रभावात्मकता में वृध्दि होती है और वातावरण की अनुकूलता भी सार्थक होती है। इस प्रकार के चित्रणों के प्राय: निम्नलिखित दो मुख्य उद्देश्य होते हैं -

१. कथानक के प्रवाह में योग देते हुए उसमें अपेक्षाकृत अधिक मार्मिकता का समावेश करना ।

२. भिन्न-भिन्न पात्रों के चरित्रों की विशेषताओं को अधिक स्पष्टता प्रदान करना । ''[१]

' अकेला पलाश ' में प्राकृतिक वातावरण की दृष्टिसे इस घटनास्थल एवं घटनाकाल संबंधी प्रकृति का कुछ स्थलोंपर सराहनीय वर्णन किया गया है। आदिवासी क्षेत्रों के कुछ मनोहरी स्थलों की ओर मेहरुन्निसा जी ने संकेत किया है। जैसे -

१. " आसपास खेत ही खेत थे। धान की फसल एकदम तैयार पक कर खड़ी थी । पकी हुई धान की बालियाँ इतनी प्यारी गुच्छेवाली लग रही थीं, दूर से ही वह लुभा रही थीं, ललचा रही थीं, जैसे कह रही हो, लो हमें काटो और ने चलो, हमें भोगो । पूर्ण यौवना थी धान की फसल चिड़िया और कुछ जंगली पक्षी खेत की मेंड़ पर बैठे थे । ऊँचे रास्ते के दोनों ओर हजारों ऊँचे-ऊँचे आम के पेड़ खेड़े थे । आम के पेड़ इतने घने और आपस में गुँथे हुए थे कि देखने ने लगता था कि आम के पेड़ों के

---

१ *डॉ. प्रतापनारायण टंडन - हिंदी उपन्यास में कथाशिल्प का विकास, पृष्ठ ६८ से ६९ तक ।*

नीचे की जो धरती है उसने बरसों तक सूरज कीएक बूँद को स्पर्श नही किया होगा ।''[१]

२. पलाश अपनी टहनियों से झड़कर नीचे धरतीपर बिखर गया था और पेड़ अपनी फिर वही कुरूपता लिए खड़ा था । झड़े हुए फूल धरती पर बिछ गये थे जिससे रंगीन हुई धरती यहाँ से वहाँ तक भली लग रही थी । सुंदरता का अन्त हो चुका था । हर सुंदर चीज का यही अंत है। कुरूपता अपनी जगह बरकरार रहती है, पर सुंदरता नहीं । सपने भले लगते है पर बस आँख बंद रहने तक ही । ''[२]

इसके अतिरिक्त इस उपन्यास में कमरा, बस स्टेशन, एवं आदिवासी केंद्रों का भी संक्षेप में आकर्षक वर्णन किया है। प्रसंगानुसार प्रवृत्ति के अत्याधिक लघु चित्रों को भी अंकित किया है। उनमें सुरम्यता और सरसता भी निर्विवाद रूप से उभरी है।

२.५.२.३ *सामाजिक परिस्थिति* -

सामाजिक रीतिरिवाज, पंरपरा, शकुन, श्रद्धा, अंधविश्वास आदि का चित्रण विषयवस्तु को प्रभावी रूप से अंकित करने के लिए किया जाता है।

" अकेला पलाश '' में लेखिका ने अनेक स्थलोंपर शकुन, अंधविश्वासों , परम्पराओं का चित्रण कर उपन्यास के प्रभाव को गहरा बना दिया है।

---

२ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ ४०।*

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ २३२।*

जैसे - तहमीना के विवाह के समय दहेज में दिये हुए ड्रेसिंग टेबिल का शीशा टूटनेपर महिलाएँ विचित्र बाते करने लगती है।

" यह तो अपशकुन है ।"[१]

प्रस्तुत उपन्यास में राजनीतिक, आर्थिक परिवेश का चित्रण विशेष रूप से नहीं है। एकाध स्थानपर केवल संकेत मात्र मिल जाता है।

२.५.३ *देशकाल-वातावरण संबंधी चित्रण का मूल्यांकन* -

देशकाल-वातावण की दृष्टि से ' अकेला पलाश ' की विशेषताएँ इस प्रकार है -

२.५.३.१ *चित्रण की सूक्ष्मता और गहनता* -

मेहरुन्निसा परवेज जी के ' अकेला पलाश ' के देशकाल एवं वातावरण संबंधी वर्णन अत्यंत सूक्ष्म है। मानव चरित्र में उपकी गहरी पैठ है। उसके द्वारा आतंरिक तथा बाह्य ऐसे दोनों प्रकार के वातावरण की सृष्टि हुई है।

लेखिका ने पत्रों की मानसिक स्थिति एवं घटना-प्रसंगों का सूक्ष्म और प्रभावशाली चित्रण किया है।

जैसे - झड़े हुए पलाश के पेड़ को देखकर तहमीना सोचती है - " जीवन का सत्य यही है शायद जो उसकी आँखें अभी देख रही

---

२ *वही, पृष्ठ १११।*

थीं । इसी तरह सब...सब नष्ट होना है, एक दिन बिखरना है। हर चीज जो हमें भली लगती है, प्यारी लगती है, वह स्थिर नहीं रह सकती ।''[१]

२.५.३.२ *चित्रण की यथार्थता और स्वाभाविकता* -

मेहरुन्निसा का देशकाल-वातावरण संबंधी चित्रण यथार्थ और स्वाभाविक है । ' अकेला पलाश ' में लेखिका ने आदिवासी प्रदेश का वातावरण, आफिस का वातावरण, बस स्टॉप का वातावरण, बगीचे का वातावरण, मेले का वातावरण आदि का बड़ा स्वाभाविक और यथार्थ चित्रण किया है। जैसे -

" मेला जहाँ गाँव-वालों के लिए खरीदने का स्थान था, वहीं मिलन-स्थान भी है। बरसों से तरसी आँखे, तितरा-तितरा कर, भीड़ के रेले को चीरती इधर-उधर बहककर बिछड़े प्रेमी को खेाज रही थीं। प्रीत की चोट खाई बावली आँखे फटफटाकर अपने साथियों से भटककर पीछे बहक रही थीं। बरसों से बिछड़े अपने परिवार से मिलती औरत प्रसन्नता से फूली न समा रही थी।''[२]

२.५.३.३ *वर्णन शैली की प्रभावात्मकता* -

उपन्यास लेखन में सर्वाधिक प्रचलित शैली वर्णनात्मक शैली ही है। इससे उपन्यासकार निर्लिप्त भाव से कथा, चरित्र, वातावरण आदि

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ २३२।*

२ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ २२९।*

का वर्णन करता चला जाता है। इस शैली की सूक्ष्मता, प्रभावात्मकता तथा कुशलता के अनेक सुंदर उदाहरण ' अकेला पलाश ' में स्थान-स्थान पर मिलते हैं। जैसे -

" कल यहाँ, रौनक थी और आज .... ? गुमराह पैर लौट गये अपने-अपने गाँवों को, बच गये स्मृतियों के दाग, धब्बे, उदासियाँ, उजड़ापन !! जब चले थे कितने लोग साथ थे, और आज .... कोई नहीं । शेष है बस अपना अकेलापन.... । "[१]

२.५.३.४ *सोद्देश्यता* -

साहित्यकृति सोद्देश्य होती है। देशकाल-वातावरण का चित्रण रचनाकार के उद्देश्यों की पूर्ति करना है। ' अकेला पलाश ' का उद्देश्य सपष्ट करती हुई मेहरुन्निसा जी तहमीना के माध्यम से कहती है -

१. " पलाश ! लाख सुंदर हो, सुंदर फूल हों, पर उसमें सुगन्ध नहीं न । उसे जूड़े में सजाया नहीं जा सकता, वह किसी भी गुलदस्ते की शोभा नहीं बन पाता । पलाश सिर्फ अपनी डाल पर लगता है और उसी पर मुरझाकर धरती पर गिर जाता है। वह सिर्फ अपने लिए, अपनी डालतक ही सीमित रहता है।"[२]

२. " कितना अजीब है ! पुरूष पहले औरत के पीछे भागता है, बाद में औरत को उसके पीछे भागना पड़ता है, अपना सबकुछ लुटाकर । हर युग में, हर पुरूष यही करता है और हमेशा नारी उससे छली जाती

---

२ *वही, पृष्ठ २३१।*

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ २३२।*

रही है। धोखा जानकर भी धोखा खाती रही है। खूबसूरत धोखा जो सिवाय आँसू और बरबादी के कुछ नहीं देता ।''[१]

संक्षेप में हम कहते है कि नारी पर होनेवाला अन्याय, अत्याचार, उसपर डाले गये बंधन, उससे मुक्त होने की उसकी छटपटाहट, उसका अकेला पन आदि को उजागर करना लेखिका का उद्देश्य रहा है।

इस प्रकार ' अकेला पलाश ' में मेहरुन्निसा परवेज ने कथावस्तु, पात्रोंद्वारा आंतरिक एवं बाह्य वातावरण का यथार्थ चित्रण किया है।

२.६ उद्देश्य -

संसार के सभी कार्यों की तरह साहित्यिक रचना भी सोद्देश्य होती है। " वास्तव में उपन्यासकार अपनी कृति में किसी विशिष्ट दृष्टिकोण का सहारा लेता है और उसके आधारपर मानव-जीवन का मूल्यांकन करते हुए अपने जीवन-दर्शन का स्पष्टीकरण करता है। ''[२]

मानव जीवन का चित्रण, समस्याओं का अंकन एवं समाधान, युगीन परिवेश की अभिव्यक्ति, भावनाओं की अभिव्यक्ति, शिक्षा उपदेश, मनोरंजन, युगबोध आदि अनेकानेक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए साहित्य की रचना की जाती है।

---

२ *वही, पृष्ठ १८६।*

१ *डॉ. प्रतापनारायण टंडन - हिंदी उपन्यास : उद्भव और विकास, पृष्ठ ४३।*

इस उपन्यास को लिखने के पीछे लेखिका का उद्देश्य आज के शिक्षित समाज में टूटते हुए वैवाहिक सबंध, नारी समस्या, आंतरजातिय विवाह, भ्रष्टाचार, बेकारी, सामाजिक विषमता, धार्मिक शोषण आदि कुरीतियों का चित्रण करना है।

तुषार के कुछ संवादों द्वारा लेखिका ने अपना उद्देश्य व्यक्त किया है। जैसे --

" हम पुरूष वर्ग जो अपने आप को स्त्री का स्वामी कहते है, वह दर असल झूठ है। हम अपने स्वार्थ के लिए ही स्त्री को इतनी स्वतंत्रता देते है कि ताकि वह घर के लिए पैसा कमा के । तुम से ही पूछता हूँ, तुमने इतना कमाया, पर क्या तुम्हें अपनी इच्छा से खर्च करने की इजाजत है ? "[१]

लेखिका का उद्देश्य आज की शिक्षित नारी की असहायता, उसकी मानसिकता, उसका अकेलापन चित्रित करना है। डॉ. शीलप्रभा वर्मा इस उपन्यास के बारे में कहती है - ' अकेला पलाश ' उपन्यास बदलते सामाजिक संदर्भों को आत्मसात किए हुए है। यह कृति नायिका तहमीना के पौरूषहीन पति एवं स्वस्थ सुंदर प्रेमी के त्रिकोण को लेकर लिखी गई है। प्रस्तुत कृति युगानुरूप सामाजिक प्रयत्नों के अनेक प्रसंग और तथ्य लिए हुए हैं।

इस प्रकार लेखिका ने ' अकेला पलाश ' के माध्यम से दाम्पत्य जीवन का ठंडापन, विवाहोत्तर संबंध, आंतरजातिय विवाह, वैवाहिक जीवन की समस्याएँ, उच्चपद पर कार्यरत नारी की समस्याएँ, सरकारी दफ्तरों में व्याप्त भ्रष्टाचार, बेरोजगार आदि अनेक सामाजिक विषयों को

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १६७।*

उजागर करने के साथ नारी वादी चेतना को जागृत करने के उद्देश्य में सफलता पायी है।

२.७ *शीर्षक* –

शीर्षक उपन्यास का महत्त्वपूर्ण अंग माना जाता है। शीर्षक के महत्त्वपूर्ण गुण है – संक्षिप्तता, आकर्षकता, उत्सुकता, जिज्ञासावृद्धि कौतुहलवृद्धि प्रभावात्मकता, सरलता, सरसता, स्वाभाविकता आदि ।

२.७.१ *शीर्षक के आधार* –

शीर्षक निम्नलिखित आधारपर निश्चित किया जाता है १. विशेष पात्र २. स्थान, ३. प्रमुख घटना, ४. मूल या केंद्रीय भाव, ५. रचनाकार का नाम आदि ।

' अकेला पलाश ' उपन्यास का शीर्षक प्रतीकात्मक रूप से दिया गया है। पलाश का पेड़ आकर्षक, सुंदर, प्यारा होते हुए भी उसे अपेक्षा और अकेलेपन को सहना पड़ता है, क्योंकि उसमें सुगंध नहीं होती है। ठीक इस पलाश की तरह तहमीना का जीवन है। लेखिका मेहरुन्निसा परवेज को प्रकृति से बेहद लगाव है और यह बात उनकी हर साहित्यिक कृति पढ़ने के बाद सामने आती है। और यहाँ पर भी लेखिका ने ' अकेला पलाश ' की तहमीना की स्थिति का वर्णन उसे पलाश की उपमा देकर किया है, जिससे पाठ्क कुछ ही शब्दों को पढ़ने के बाद तहमीना की स्थिति समझ जाता है। जैसे –

" पलाश लाख सुंदर हो, सुंदर फूल हों, पर उसमें सुंगध नहीं न! उसे जूड़े में सजाया नहीं जा सकता, वह किसी भी गुलदस्ते की शोभा

नहीं बन पाता । पलाश सिर्फ अपनी डाल पर लगता है और उसी पर मुरझाकर धरतीपर गिर जाता है। वह सिर्फ अपने लिए, अपनी डालतक ही सीमित रहता है। कितना कड़वा सत्य है जिसे उसने आज जाना, अभी ..... इसी क्षण ! !''[१]

पूरे उपन्यास में लेखिका ने तहमीना के अकेलेपन की ओर निर्देश किया है। तहमीना को बचपन से लेकर पूरे जीवनभर इसी समस्या का सामना करना पड़ा है। उसके अपनों ने ही उसका उपयोग अपने स्वार्थ के लिए किया है। तहमीना माता-पिता द्वारा उपेक्षित, पति द्वारा दुर्लक्षित तथा प्रेमी द्वारा धोखा खायी हुई नारी का प्रतिनिधित्व करती है। उपन्यास में शुरू से लेकर अंत तक तहमीना का अकेलापन, उसकी घुटन, दर्द और पीड़ा ही पाठकों को प्रभावित करती है।

माँ-बाप के आपसी तनाव के कारण तहमीना के निर्दोष बाल-मन पर छानेवाला आतंक, अनमेल विवाह के कारण बिखेरता दाम्पत्य जीवन आदि का मनोवैज्ञानिक चित्रण मेहरुन्निसा जी ने बड़ी ही सूक्ष्मतासे किया है। साथ ही पाठकों को सामाजिक प्रश्नानुकूलता के विषय में सोचने के लिए बाध्य किया है। इससे स्पष्ट होता है कि संपूर्ण कथा तहमीना के अकेलेपन के इर्द-गिर्द ही घूमती हुई विकसित होती है। इस प्रकार कथानक का मूल आधार तहमीना का अकेलापन है, जो ' अकेला पलाश ' शीर्षक की सार्थकता को स्वत: सिध्द करता है। उपन्यास के अन्य पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं का उद्‌घाटन भी तहमीना द्वारा ही हुआ है। ' शीर्षक ' के आधारपर ' अकेला पलाश ' सफल उपन्यास है।

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ २३२।*

२.८ *अकेला पलाश के चित्रण की विशेषताएँ -*

२.८.१ *लेखन में सरलता और बोधगम्यता -*

मेहरुन्निसा परवेज के लेखन में सरलता, सहजता और बोधगम्यता है। सीधी-साधी सरल भाषा के कारण पाठक उनके विचारों को सहजता से समझता है। लेखिका ने पात्रों के विचारों के माध्यम से जिंदगी के सत्य का उद्‌घाटन किया है। तहमीना अपने निराश जीवन को स्पष्ट करती हुयी कहती है - " जो पौधे मुझति है और बरसात में पानी मिलने पर खिल जाते है वह आम पौधे होते हैं, सस्ते पौधे होते हैं, पर जो नाजुक और ऊँची किस्म की जातवाले पौधे होते हैं वह एक बार मुझति हैं जो वह दुबारा नहीं जी पाते । उसी तरह हर औरत अपने को नये वातावरण में फिट नहीं कर पाती । मन की मृत्यु एक बार हो जाति है न, फिर वह दोबारा नहीं जी पाता ।"[१]

तुषार भावुकता और भावना के अंतर को स्पष्ट करता हुआ कहता है - " भावना ठीक है, पर भावुकता नहीं । जो सही आदमी की पहचान न दे सके । वह दोस्त कहाँ हुआ, दुश्मन हुआ न? दोस्त हमेशा सही बात की पहचान कराते हैं, सही पहचान देते हैं।"[२]

इस उपन्यास के माध्यम से मेहरुन्निसा जी ने नारी की मानसिकता को स्पष्ट किया है। इस प्रकार मेहरुन्निसा परवेज के लेखन की यह सरलता, सुबोधता इस उपन्यास में स्पष्ट रूप से उजागर होती है,जो उनके लेखन की विशेषता है।

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज- अकेला पलाश, पृष्ठ १४६।*

२ *वही, पृष्ठ १६४।*

२.८.२ *मध्यवर्गीय परिवेश का चित्रण -*

मध्यवर्गीय परिवेश का यथार्थ चित्रण मेहरुन्निसा के लेखन की एक और विशेषता है। मध्यवर्गीय समाज जीवन की समस्याएँ, उनकी सुख-दु:ख की कल्पनाएँ , उनकी छटपट हट आदि को लेखिका ने ' अकेला पलाश ' में चित्रित किया है। मध्यवर्गीय समाज को, खासकर नारी को समाज द्वारा बनाये गये काफी बंधनों को सहना पड़ता है। तहमीना अपनी स्थिति और घुटन की ओर निर्देश करती करती हुई सवाल है - " कोई व्यक्ति ऊँचे पद पर है उसका बाहर नाम है, तो इसका क्या यह अर्थ है कि वह अपनी सारी भावनाओं को मार दे ? उसे प्यार करने का कोई हक्क नहीं ? उसे जीने का हक्क नहीं ? वह लोक-लाज के कारण क्या घुट-घुटकर मर जाये ? क्या उसके बड़े होने का, शोहरत हासिल करने का यह दंड है ? क्या वह एक आम आदमी की तरह, आम इन्सान की तरह नहीं जी सकता ? उसे हँसने का कोई अधिकार नहीं, आखिर ऐसा क्यो ? ''[१]

मध्यवर्गीय मानसिकता के कारण तहमीना को जीवन भर घुटना पड़ता है। तुषार से संबंध बढ़नेपर वह खुद को अपराधी महसूस करती है क्योंकि वह जमशेद की पत्नी है। किसी पत्नी होकर किसी गैर मर्द के साथ संबंध रखना मध्यवर्गीय परिवेश में स्वीकृत नहीं है। इसीकारण तहमीना का अपराधीपण, उसकी छटपटाहट मध्यवर्गीय नारी की मानसिकता स्पष्ट करती है। ' अकेला पलाश ' के अंतर्गत तहमीना का चित्रण मध्यवर्गीय परिवेश को सशक्त ढंग से अंकित करता है।

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ २२३।*

२.८.३ *यथार्थ का अंकन करने की क्षमता* -

मेहरुन्निसा जी के ' अकेला पलाश ' के चित्रण में आज की वास्तविक स्थिति का यथार्थ चित्रण करने की शक्ति है। आधुनिक समाज में माता-पिता के तनाव के कारण उत्पन्न समस्या, दाम्पत्य जीवन के ठंडेपन की समस्या की वास्तविकता को परवेज जी ने सहजता से उकेरा है। पाठकों को तहमीना के दर्द का परिचय उपन्यास को पढ़ने के बाद अपने आप मिल जाता है। मेहरुन्निसा जी ने अपना साहित्य सप्रयोजन लिखा है। उनका वक्तव्य इसका प्रमाण है - " मेरी कहानियाँ यदि अपना परिचय खुद न दे पायी, जो समझूँगी, मैंने जो जिया, जो पाया सब झूठ के सिवा कुछ भी नहीं ।''[१]

लेखिका का प्रस्तुत कथन ही उपन्यास की सथार्थता को स्पष्ट करता है।

मानसिक बिखराव के कारण तहमीना की जो दशा हुई है, उसका चित्रण बड़ी सूक्ष्मता से किया है - " तमाम परेशानियों के कारण मन को शांति नहीं लग रही थी, घबराहट में कुछ अच्छा नहीं लग रहा था। बार-बार उसके मन में ख्याल उठ रहा था कि पता नहीं उसका आना यहाँ ठीक हुआ या नहीं ? तुषार के घर के लोग पता नहीं उसके बारे में क्या सोच रहे होंगे ? ओह! तुषार के कारण आज वह सारी लाज त्याग यहाँ बैठी है, मान-मर्यादा, लोक-लाज सब जैसे वह भुला बैठी है ।''[२]

तहमीना के चित्रण द्वारा मेहरुन्निसा जी ने अप्रत्यक्ष रूप से अपने जीवन के अनुभवों को प्रस्तुत किया है। अत: उनके लेखन में

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - आदम और हव्वा, पृष्ठ ७।*

२ *वही, पृष्ठ १८६।*

अनुभूति की गहराई और नये मूल्य उभारने का प्रयास है। यह उनके चित्रण की महत्त्वपूण विशेषता है।

२.८.४ *विषय के साथ तादात्म्य की स्थिति* –

मेहरुन्निसा जी अपने विषय के साथ एकरूप हो जाती है। जो भी विषय है उसे मन लगाकर स्पष्ट करने की कोशिश करती है। उसकी संवेदना विषय के साथ पूरी तरह से जूड़ जाती है। तहमीना के साथ लेखिका घुल-मिल गई हैं क्योंकि लेखिका ने तहमीना के माध्यम से अपने दु:खों की वाणी देने का प्रयास किया है, जिसके कारण ' अकेला पलाश ' सजीव और यथार्थ लगता है।

२.८.५ *नारी स्वतंत्रता की प्रेरणादायी*–

मेहरुन्निसा जी के चित्रण की महत्त्वपूर्ण विशेषता नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व को लेकर उभरी हैं। नारी स्वतंत्रता का मूल उन्होंने विशेष रूप से पकड़ा है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका का तादात्मीकरण तहमीना से हुआ है। वह तहमीना के लिए स्वतंत्रता खोज रही है। नारी के बंधनों को लेखिका ने व्यक्त किया है। तुषार के माध्यम से लेखिका नाारी को अपना सुख पाने की हक्कदार समझती है। जैसे –

" तुमने अपने को पत्थर मान लिया है और अपने आपको घर के लिए, समाज के लिए ढ़ाल लिया है, पर तुम यह बात भूल गयी हो कि तुम्हारी अपनी इच्छाएँ हैं, तुम्हें अपने लिए भी जीना है। आदमी पहले खुद को देखता है, फिर दूसरे को ।''[१]

---

१ *मेहसन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ट १३६।*

' अकेला पलाश ' उपन्यास के द्वारा नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व को स्थापित करने की कोशिश लेखिका ने की है। लेखिका ने स्पष्ट किया है कि नारी-पुरूष दोनों का व्यवहार एक जैसा होना आवश्यक है, दोनों में सामंजस्य होना आवश्यक है। समाज के दोहरे मानदण्डों का विरोध कर लेखिका ने नारी स्वतंत्रता की ओर निर्देश किया है।

२.८.६ *मनोवैज्ञानिकता* -

मनोवैज्ञानिकता ' अकेला पलाश ' की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। मेहरुन्निसा जी के इस उपन्यास के पात्र परिवेशजन्य कारणों अथवा परिस्थिति से समायोजन न करने के कारण विभिन्न कुण्ठाओं और ग्रन्थियों से विकृत है। टूटने और बनने की सतत प्रक्रिया इनमें देखी जा सकती है। तहमीना भी इसी समस्या से ग्रस्त है। तुषार के चले जानेपर तहमीना पहले तो निराश है, अत में वह तय करती है -" जिस जगह हम टूटे है, जहाँ हमारे पैर काट लिये गये, वहीं पर हमें खेड़े होना है, अपने को सँभालना है। तुषार समझता है हम टूटकर मिट्टी में मिल जायेंगे, पर नहीं हम यहीं जीकर, हँसकर उसे दिखायेंगे ।''[१]

२.८.७ *कल्पनातत्व* -

प्रस्तुत उपन्यास के पात्रों की उड़ान तथा मानसिकता को चित्रित करते समय लेखिका ने कल्पना तत्व का सुंदर प्रयोग किया है। उदा--

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ २२२।*

" क्या ही अच्छा हो वह अभी बैग उठाकर बिना आहट किये, बिना मीनाक्षी को बताये कहीं किसी भी राह चल पड़े और किसी गुमनाम जगह जाकर पनाह ले! जहाँ उसे कोई न जानता हो, जहाँ रोने पर पाबन्दी न हो, कोई टोकने वाला न हो, वहाँ बस वह अकेली हो, एकदम अकेली ।"[१]

' अकेला पलाश ' उपन्यास के चित्रण में सरलता, सहजता तथा बोधगम्यता दिखायी देती है, जिसके कारण मेहरुन्निसा अपने उद्देश्य को पाठकों तक पहुँचाने में सफल हुयी है।

निष्कर्ष –

किसी भी उपन्यास को सफल तभी माना जा सकता है जब कि वह तत्त्वों के आधारपर खरा उतरता हो । उपन्यास के तत्त्वों को आधार बनाकर ही कोई उपन्यासकार अपनी रचना का निर्माण कर सकता है। मेहरुन्निसा परवेज के ' अकेला पलाश '; का उपन्यास के तत्त्वों के आधारपर विवेचन, विश्लेषण करने के बाद यह स्पष्ट होता है कि विवेच्य उपन्यास तत्त्वों की दृष्टि से सफल बन गया है।

मेहरुन्निसा परवेज ने कथानक की रचना करते समय नायिका तहमीना के जीवन की उन घटनाओं को बड़ी कुशलता से चुना है, जो उपन्यास के मूल उद्देश्य को पूरी तरह उभारकर पाठक के सामने ला सके । ' अकेला पलाश ' का कथानक क्रमबद्ध, सुनियोजित पात्र, घटनाओं की संरचना के माध्यम से एक निश्चित गति से अपने आप बढ़ता जाता है। कथा निर्माण में लेखिका ने केवल उन्हीं घटनाओं का नियोजन

---

1 *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ २२७।*

किया है जिनमें से एक भी घटना यदि निकाल दी जाये तो निश्चय ही कथानक में एक खोंखलापन पैदा हो जायेगा ।

पात्र और चरित्र-चित्रण के अंतर्गत मेहरुन्निसा जी ने ' अकेला पलाश ' के प्रत्येक पात्र का सृजन किसी-न-किसी खास उद्देश्य से किया है। पूरे उपन्यास के पात्रों के चरित्र-विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि ये सभी पात्र उपन्यास में गतिशीलता, रोचकता, प्रभावोत्पादकता लाते हैं और अत्यंत शीघ्रता से उपन्यास को उद्देश्य की ओर अग्रसर करते हैं। पात्र योजना स्वाभाविक एवं सार्थक है। अत्यंत सहज सुंदर शैली में मेहरुन्निसा परवेज ने पात्रों को पाठकों तक पहुँचाया है, जो उनके मन-मानस में जा बसते हैं।

' अकेला पलाश ' में सहज, स्वाभाविक, चुटिले, संक्षिप्त, अर्थगर्भित विविध प्रकार के संवादों का अंतर्भाव किया है। प्रस्तुत उपन्यास में व्याख्यात्मक, भावात्मक, आवेशात्मक, नाटकीय, मनोवैज्ञानिक, हास्य-व्यंग्यात्मक, गंभीर, व्यावहारिक, तर्कपूर्ण, मार्मिक, उपदेशात्मक तथा अलंकारिक आदि संवादों से पात्र सहज ढंग से उभर आये है। प्रस्तुत उपन्यास में मेहरुन्निसा जी का प्रमुख उद्देश्य जीवन में हर रिश्तेद्वारा धोखा खायी हुई नारी की अकेलेपन की पीड़ा को उद्घाटित करना रहा है। इस दृष्टिसे लेखिका को काफी सफलता मिली है। संवादों की भरमार होते हुए भी क्लिष्टता की मात्रा कहीं भी दिखायी नहीं देती।

भाषा-शैली की दृष्टि से मेहरुन्निसा जी ने प्रभावपूर्ण, रोचक एवं पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। उन्होंने उपन्यास में शब्दप्रयोगों के विभिन्न रूपों को आपनाया है। इसमें अशिक्षित पात्र बहुत कम है, ज्यादातर शिक्षित पात्रों का चित्रण हुआ है, अत: उनकी बोलचाल में अंग्रेजी शब्दों की संख्या अधिक है, फिर भी कथानक के विकास में कोई बाधा निर्माण नहीं होती । भाषा को सौंदर्य प्रदान करने के लिए विशेषण, रूपक,

उपमानों के साथ-साथ मुहावरें-लोकोक्तियों का भी प्रयोग किया गया है। भाषा के अनेक रूपों के साथ विविध शैलियों को भी अपनाया है। अत: ' अकेला पलाश ' की भाषा-शैली सफल मानी जा सकती है।

देशकाल-वातावरण की दृष्टि से ' अकेला पलाश ' सफल उपन्यास है। इसमें आंतरिक और बाह्य परिवेश का प्रभावी चित्रण हुआ है, जिससे लेखिका को उद्देश्यपूर्ति में सफलता मिली है।

' अकेला पलाश ' की आलोचना करने पर पता चलता है कि मेहरुन्निसा जी ने विवेच्य उपन्यास सोद्देश्य लिखा है। जिसमें उन्होंने आधुनिक तथा शिक्षित पति-पत्नी के दांपत्य जीवन का बिखराव, नारी का अकेलापन, पुरूष से प्राप्त छली व्यवहार, नारी की वेदना आदि को बड़ी मार्मिकता से रूपायित किया है। लेखिका नारी के दर्द को पाठकों तक पहुँचाने में सफल रही है। तहमीना के माध्यम से लेखिका यही साबित करना चाहती है कि औरत के हिस्से में झूठ, फरेब, धोखा इसके सिवाय कुछ आता ही नहीं, मानों यही उसकी नियति है। प्रेम, स्नेह ऐसी पवित्र, सुंदर चीजे उसे मिलती भी है, वह भी भ्रष्ट होकर। अन्य पात्रों के माध्यम से लेखिका विभिन्न सरकारी विभागों के भ्रष्टाचार, कहीं अंतर्जातीय विवाह तो कही नारी-जीवन की विविध स्थितियों को चित्रित करने में सफल रही है। नारी की पीड़ा को पाठकों तक पहुँचाने का लेखिका का उद्देश्य पूर्ण हुआ है।

' अकेला पलाश ' यह शीर्षक सार्थक और उचित लगता है। माँ-बाप के आपसी झगड़े के कारण तहमीना की होनेवाली घुटन, उसकी कुर्बानी, पति से उसका घुल-मिल न जाना, जिस सुख की वह हकदार थी वह उसे प्राप्त न होना, प्रेमी द्वारा ठुकराया जाना और अंत में उसका अकेले रहने का निर्णय और इन सभी प्रक्रियाओं से गुजरती तहमीना की मानसिकता यहीं इस उपन्यास का कथ्य है, जो शीर्षक के माध्यम से स्पष्ट

होता है। शीर्षक सरल, सरस, छोटा और रोचकता के साथ-साथ कौतुहलपूर्ण है। ' अकेला पलाश ' का शीर्षक जिज्ञासा उत्पन्न करनेवाला, केंद्रिय भावनाओं को प्रकट करनेवाला तथा पाठक के मन को छूनेवाला है।

प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से मेहरुन्निसा जी ने मध्यवर्गीय नारी की मानसिकता को यथार्थ रूप में चित्रित किया है। लेखिका उपन्यास की नायिका तहमीना के साथ एकरूप होकर उसकी छटपटाहट, उसकी अकेलेपन की घुटन को सफलता से पाठकों तक पहुँचाने में कामयाब हुई है। विविध पात्रों की मानसिकता द्वारा उन्होंने जीवन के विविध रूपों का सफलता से चित्रण किया है।

इस तरह ' अकेला पलाश ' तत्त्वों की दृष्टि से एक सफल उपन्यास है।